RNI:RJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2018-20
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2018

शिव आमंत्रण

आध्यात्म की नई उड़ान

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

महा शिवरात्रि विशेष

वर्ष ▸ 06 | अंक ▸ 21 | हिन्दी (मासिक) | ▸ 2021 | पृष्ठ ▸ 16 | मूल्य ▸ ₹ 9.50

महाशिवरात्रि ▸ परमपिता शिव परमात्मा अवतरित होकर दे रहे गीता ज्ञान

विश्व बदलाव का ईश्वरीय संकेत

परिवर्तन सृष्टि चक्र का शाश्वत नियम है। जैसे दिन के बाद रात होना निश्चित है, वैसे ही इस सृष्टि चक्र में सतयुग के बाद त्रेतायुग, द्वापरयुग और फिर कलियुग आना तय है। वर्तमान में प्रकृति के पांचों तत्वों में बिगड़ता असंतुलन, मानव के कर्मों का निम्नस्तर और हर चीज की अति परिवर्तन के प्रबल संकेत दे रहे हैं। परिवर्तन की इस बेला में नई दुनिया में जाने की तैयारी करने का यह उचित समय है!

श्रीमद्भागवत गीता, महाभारत, शिव पुराण, रामायण सहित अन्य धर्मग्रंथों में स्पष्ट लिखा है कि जब-जब धर्म की अतिग्लानि होती है, तब-तब परमपिता शिव परमात्मा इस सृष्टि पर अवतरित होकर नई सतयुगी सृष्टि रचते हैं।

वर्तमान समय चल रहा कलियुग के अंत और सतयुग के आदि का संधि काल- 'संगमयुग'

'गीता' में वर्णित धर्मग्लानि के संकेतों से भी निन्नस्तर के हुए मानव के कर्म और सोच

गुप्त रूप में लाखों भाई-बहनें नई दुनिया की तैयारी में जुटे

■ शिव आमंत्रण

आबू रोड। परिवर्तन सृष्टि का शाश्वत नियम है। हर चीज कभी भी अपने मूल स्वरूप में नहीं होती है, फिर वह चाहे इंसान हों, प्रकृति या फिर सृष्टि। जैसे इंसान जीवन की विभिन्न अवस्थाओं (जन्म, बचपन, युवा, प्रौढ़, बुजुर्ग और अंत में मृत्यु) से गुजरता है, वैसे ही प्रकृति के पांचों तत्व और सृष्टि चक्र भी इन अवस्थाओं से गुजरती है। सृष्टि चक्र में सतयुग के बाद त्रेतायुग, द्वापरयुग, कलियुग और फिर सतयुग। प्रकृति के संतुलन के लिए सृजन और विनाश बहुत जरूरी है। वर्तमान में हर चीज तेजी से बदल रही है, फिर चाहे प्रकृति में बढ़ता असंतुलन हो या मानवीय कर्मों का गिरता स्तर। व्यक्ति की सोच से लेकर आचरण और गलत कर्म इतने गिर चुके हैं कि सुनकर रुह कांप उठती है। निम्न स्तर के धर्म ग्लानि के इन संकेतों का तो गीता तक में भी वर्णन नहीं है। वर्तमान में दुनिया और मानव की जो स्थिति हो चुकी है, ऐसी परिस्थिति को लेकर धर्मग्रंथों और शास्त्रों में इसे धर्मग्लानि, परिवर्तन और नई दुनिया के सृजन का समय बताया गया है। प्रस्तुत स्टोरी में हमने वेद शास्त्र और धर्मग्रंथों में विश्व बदलाव को लेकर जो बातें कहीं गईं हैं उन्हें संयोजित कर वर्तमान समय को लेकर ईश्वरीय संकेतों की ओर ध्यान इंगित किया है, **एक विवरण....**

1937 में ब्रह्माकुमारीज की स्थापना की गई

12 लाख लोग बने परमात्म अवतरण के साक्षी

गीता में लिखा है- 'मेरा जन्म दिव्य और अलौकिक है'

गीता में परमात्मा ने कहा है कि "मेरा जन्म दिव्य और अलौकिक है। मैं सूर्य, चांद और तारागण के भी पार परमधाम का वासी हूं। मैं प्रकृति को वश करके इस लोक में धर्म की स्थापना करने और प्राय: लुप्त हुआ ज्ञान सुनाने आता हूं। वत्स! तू मन को मुझमें लगा। मैं तुझे सब पापों से मुक्त करूंगा, मैं तुम्हें परमधाम ले चलूंगा" चूंकि परमात्मा गीता में किए अपने वायदे अनुसार साधारण मनुष्य तन का आधार लेकर नई सृष्टि स्थापना की आधारशिला रखते हैं। इस दिव्य कार्य में भागीरथी बनने पर वह उन्हें दिव्य कर्तव्यवाचक नाम प्रजापिता ब्रह्मा देते हैं। उनके मुख से अपने अवतरण और राजयोग की शिक्षा देते हैं।

परमात्मा ने गीता में साफ कहा है कि हे! मानव तू एक जन्म मेरे बताए मार्ग पर चलकर अपने मन को मुझमें लगा तो मैं तुम्हें जन्म-जन्म के पापों से मुक्त कर दूंगा।

न मे विदु: सुरगणा: प्रभवं न महर्षय:।
अहमदिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वश: ।।2।।

(श्रीमद्भागवत गीता, दशम अध्याय)

भावार्थ: मेरी उत्पत्ति को न देवता लोग जानते हैं और न महर्षिगण जानते हैं। 'जन्म कर्म च मे दिव्यं'- मेरा वह जन्म और कर्म अलौकिक है। इन चर्म-चक्षुओं से देखा नहीं जा सकता। इसलिए मेरे उस प्रकट होने को देव और महर्षि स्तर तक पहुंचे हुए लोग भी नहीं जानते हैं। मैं सब प्रकार से देवताओं और महर्षियों का आदि कारण हूं।

यदा-यदा ही धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत् अभ्युत्थानम् धर्मस्य तदात्मानम् सृजायहम्

सर्व शास्त्र शिरोमणी श्रीमद्भागवत गीता में स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि जब-जब भारत में धर्म ग्लानि, पापाचार, भ्रष्टाचार, अत्याचार की अति होती है, तब-तब भारत में परमात्मा का अवतरण होता है। कलियुग के अंत और सतयुग के आदि के समय संगम पर परमात्मा अवतरित होकर नई सृष्टि का सृजन करते हैं। वर्तमान में ये वही समय संगमयुग चल रहा है। इसी समय परमात्मा प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर हम मनुष्यात्माओं को सहज राजयोग का ज्ञान देकर नर से नारायण व नारी से लक्ष्मी बनने की शिक्षा देकर नई दुनिया की पुनर्स्थापना करते हैं।

ऐसे कार्यों का शास्त्रों में भी नहीं है उल्लेख

शास्त्रों में जो धर्मग्लानि की बात कही गई है, आज के लोगों के कर्म उससे भी निम्नस्तर के हो चुके हैं। मनुष्य ऐसे घृणित काम कर रहा है, जिसके बारे में ना तो किसी शास्त्र में लिखा गया है और ना ही आज के पहले किसी ने सोचा होगा। बाप-बेटी, पिता पुत्र, भाई-बहन, मां-बेटे के संबंधों में भी निम्न स्तर की घटनाएं आए दिन सुनने और देखने को मिल जाती हैं। यह कहने में जरा भी संकोच नहीं है कि आज जानवर भी ऐसा कर्म नहीं करते हैं। आज मनुष्य की कीमत तुच्छ हो गई है। धर्म के नाम पर अधर्म, खून- खराबा, मजहबी झगड़ा दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। देश और दुनिया में भक्ति का रूप और तादाद दोनों ही बड़ी तीव्रता से बढ़ी हैं, परन्तु उसमें तमोप्रधानता आ गई है। मनुष्य पापों से इतना बोझिल हो गया है कि वह मंदिर व मस्जिद में भी केवल स्वार्थ की पूर्ति के लिए ही जाता है। मुझे धन दे दो, मुझे पुत्र दे दो, कोई नौकरी कोई बच्चा मांगने पहुंचता है। उन लोगों की संख्या बहुत ही कम है जो अपने लिए मुक्ति और जीवनमुक्ति का आशीर्वाद मांगते हैं। जन्मों-जन्म के लिए अपना भाग्य संवारने का यही सही मौका है।

अल्लाह को कहा- नूर

मुस्लिम धर्म में मान्यता है कि जीवन में एक बार मक्का मदीना की यात्रा अवश्य करनी चाहिए। इस पवित्र पत्थर का दर्शन मुसलमानों के लिए आवश्यक माना गया है। वो भी निराकार है, जिसकी कोई साकार आकृति नहीं है। उसको ही संग-ए-असवद और अल्लाह कहा। उसे वह लोग नूर-ए-इलाही भी कहते हैं। नूर-ए-इलाही अर्थात् वो नूर, वो तेज, वो तेजोमय स्वरूप जिसको हमने ज्योतिर्लिंगम वा ज्योतिस्वरूप कहा है। ज्योति माना ही तेज। अतः सभी ने किसी न किसी रूप मे उस परमसत्ता की शक्ति को स्वीकारा है।

एक ओंकार निराकार

सिख धर्म में गुरुनानक देवजी ने कहा है 'एक ओंकार निराकार'। उन्होंने बड़े स्पष्ट शब्दों में परमात्मा के सत्य स्वरूप का वर्णन किया है। 'वो निराकार है, निर्वैर है, सतनाम् है' जिसको काल कभी नहीं खा सकता। यह सब महिमा गुरुवाणी में लिखी हुई है। हमने ज्योतिर्लिंगम कहा उन्होंने निराकार, निर्वैर, सत्यनाम कहा। गुरुनानक देव जी को हमेशा ऊपर की तरफ अंगुली करते दिखाया गया है।

श्रीराम ने भी की पूजा

परमात्मा शिव की पूजा स्वयं श्रीराम ने भी की है, जो वर्तमान समय में रामेश्वरम के रूप में पूजा जाता है। परमात्मा शिव, श्रीराम के भी आराध्य हैं। यदि श्रीराम भगवान होते तो उन्हें ज्योतिर्लिंगम की पूजा करने की क्या आवश्यकता हुई? वह जानते थे रावण को अपनी जिस शक्ति का अभिमान है वह उसने परमात्मा शिव की तपस्या करके ही प्राप्त की थी। उससे मुकाबला करने के लिए शिव की शक्ति से ही विजयी हो सकते हैं।

किसी न किसी रूप में विश्व के सभी धर्मों में होता है परमसत्ता का पूजन

सभी धर्मों में परमात्मा शिव की मान्यता

परमात्मा को विश्वभर की मनुष्य आत्माओं ने किसी न किसी रूप में स्वीकार किया है। वह सर्वमान्य व सर्वज्ञ हैं। सर्वशक्तिमान और निर्वैर हैं। ऐसे ही देवों के भी देव महादेव परमपिता परमात्मा शिव हैं।

परमात्मा के नहीं होते माता-पिता और गुरु...

सर्वमान्य: परमात्मा एक और सत्य हैं। परमात्मा उन्हें कहा जाएगा जो सर्वमान्य हों और सभी धर्मों की आत्माएं स्वीकार करें। वह सर्व धर्मों की आत्माओं के परमपिता हैं। उन्हें अलग-अलग भाषाओं और धर्मों में अलग-अलग नामों से याद किया जाता है। जैसे- परमेश्वर, ईश्वर, ओंकार, अल्लाह, खुदा, गॉड, नूर इत्यादि उसके ही नाम हैं।

सर्वोच्च: परमात्मा उसे कहेंगे जो सर्वोच्च, सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम और परम हों यानी उसके ऊपर कोई नहीं हो। परमात्मा का कोई माता-पिता, शिक्षक, गुरु या रक्षक नहीं है। बल्कि वे ही सर्व आत्माओं के परमपिता, परमशिक्षक, परम सत्गुरु और परम रक्षक हैं।

सबसे न्यारा: परमात्मा जन्म-मरण, कर्म-फल, पाप-पुण्य, सुख-दुःख से न्यारे और सर्व प्राकृतिक बंधनों से मुक्त हैं।

सर्वज्ञ: परमात्मा ही सर्वज्ञ अर्थात् इस सृष्टि के आदि-अंत जानते हैं। सब कुछ जानता हो। वही मुक्ति और जीवनमुक्ति के दाता हैं।

शक्तियों का भंडार: परमात्मा सर्व गुणों और शक्तियों का भंडार हैं। वह सागर या सूर्य के समान अपने गुणों और शक्तियों को विश्व की सर्व आत्माओं को देकर उनका कल्याण करते हैं।

शिवपुरी के वासी हैं परमपिता शिव...

स्थूल लोक: इस सृष्टि में तीन लोक होते हैं। पहला स्थूल वतन, दूसरा सूक्ष्म वतन और तीसरा मूल वतन अर्थात् परमधाम (ब्रह्मलोक, शांतिधाम या निर्वाणधाम) मनुष्य सृष्टि अथवा स्थूल लोक जिसमें हम निवास करते हैं। इसे कर्म क्षेत्र भी कहते हैं।

सूक्ष्म लोक: सूर्य-चांद से भी पार एक अति सूक्ष्म लोक है। इसमें पहले सफेद रंग के प्रकाश तत्व में ब्रह्मापुरी, उसके ऊपर सुनहरे लाल प्रकाश में विष्णुपुरी और उसके भी पार शंकरपुरी है। इन तीनों देवताओं की पुरियों को संयुक्त रूप से सूक्ष्म लोक कहते हैं।

ब्रह्मलोक: सूक्ष्म लोक से भी ऊपर एक असीमित तेज सुनहरे लाल रंग का प्रकाश है, इसे अखंड ज्योति ब्रह्म तत्व कहते हैं। ज्योतिर्बिन्दु त्रिमूर्ति परमपिता परमात्मा शिव और सभी धर्मों की आत्माएं इसी लोक में निवास करती हैं। इसे ब्रह्मलोक, परमधाम, शांतिधाम, निर्वाणधाम, मोक्षधाम अथवा शिवपुरी कहा जाता है। परमात्मा ही 33 करोड़ देवी-देवताओं के रचनाकार, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता त्रिमूर्ति, तीनों लोकों के मालिक त्रिलोकीनाथ, जानी-जाननहार और सृष्टि के नियंता हैं।

रोम में शिवलिंग का कहा जाता है 'प्रियपस'...

पारसियों के अग्यारी में होली फायर मिलता है। पारसी जब भारत आए तो जलती हुई अग्नि का अंश लेकर आए। वह आज भी जब नई अग्यारी की स्थापना करते हैं तो जलती हुई ज्योत का अंश स्थापन करते हैं, जो परमज्योति का प्रतीक है। मिस्र में शिव की पूजा सेवा व फैजी देश में शिव को सेवा या सेवाजिया नाम से पूजते हैं। रोम में शिवलिंग को प्रियपस कहा जाता है।

शिवलिंग पर तीन रेखाएं ही क्यों...?

शिवलिंग पर तीन रेखाएं परमात्मा द्वारा रचे गए तीन देवताओं की ही प्रतीक हैं। परमात्मा शिव तीनों लोकों के स्वामी हैं। तीन पत्तों का बेलपत्र और तीन रेखाएं परमात्मा के ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता होने का प्रतीक है। वे प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा सतयुगी दैवी सृष्टि की स्थापना, विष्णु द्वारा पालना और शंकर द्वारा कलियुगी आसुरी सृष्टि का विनाश कराते हैं।

गॉड इज लाइट

जीजस ने परमात्मा को लाइट कहा। उन्होंने कहा 'गॉड इज लाइट', आई एम द सन् ऑफ गॉड। आज भी चर्च में एक बड़ी मोमबत्ती जलाते हैं जो परम ज्योति परमात्मा का ही सूचक है। ओल्ड टेस्टामेंट में दिखाया है कि जब हजरत मूसा शिनाई पर्वत पर गए तो उन्हें परमज्योति का साक्षात्कार हुआ, जिसे देख हजरत मूसा ने कहा - जेहोवा। वहीं जापान में तीन फीट की ऊंचाई पर एक लाल पत्थर रखकर ध्यान करते हैं। इसे चिंकोनसेंकी कहा जाता है। जिसका अर्थ है शांति का दाता। शांति के दाता तो परमात्मा शिव ही हैं।

शंकर भी लगाते हैं ध्यान

हम शंकरजी को हमेशा ध्यान की मुद्रा में देखते हैं। इससे स्पष्ट है उनके भी कोई आराध्य या देव हैं, जिनका वह स्मरण करते रहते हैं। परमात्मा शिव, शंकर के भी रचयिता हैं। वह शंकर द्वारा इस आसुरी सृष्टि का विनाश कराते हैं। शंकर जी की ध्यानमुद्रा में योग की वह अवस्था बताई है। अर्धनेत्र खुले और अर्ध पद्मासन या सुखासन का आसन, जिसमें वह निराकार परमात्मा का ध्यान लगाते हैं।

श्रीकृष्ण ने भी पूजा

महाभारत युद्ध के पहले कुरुक्षेत्र के मैदान में श्रीकृष्ण ने भी ज्ञानेश्वर, सर्वेश्वर की स्थापना कर उस परमपिता, सर्वशक्तिवान, निराकार शिव की पूजा-अर्चना की और उस शक्तियों के दाता से शक्ति प्राप्त कर युद्ध के मैदान में उतरे। श्रीकृष्ण ने पांडवों से भी शिव की पूजा करवाई। इसके बाद वह युद्ध के मैदान में उतरे और कौरवों पर विजय प्राप्त की। शिव को भोलेनाथ भी कहा गया है, क्योंकि वह सहज ही प्रसन्न होने वाले हैं।

शिव के साथ क्या है रात्रि का संबंध...?

विश्व की सभी महान विभूतियों के जन्मोत्सव मनाए जाते हैं, लेकिन परमात्मा शिव की जयंती को जन्मदिन न कहकर शिवरात्रि कहा जाता है, आखिर क्यों? इसका अर्थ है परमात्मा जन्ममरण से न्यारे हैं। उनका किसी महापुरुष या देवता की तरह शारीरिक जन्म नहीं होता है। वह अलौकिक जन्म लेकर अवतरित होते हैं। उनकी जयंती कर्त्तव्य वाचक रूप से मनाई जाती है। जब- जब इस सृष्टि पर पाप की अति, धर्म की ग्लानि होती है और पूरी दुनिया दुःखों से घिर जाती है तो गीता में किए अपने वायदे अनुसार परमात्मा इस धरा पर अवतरित होते हैं।

सबसे बड़ा सत्य » शिव की रचना हैं शंकर, ब्रह्मलोक के हैं वासी

शंकर के भी परमपिता हैं 'शिव'

शिव और शंकर में महान अंतर है। शिवलिंग परमात्मा शिव की प्रतिमा है। परमात्मा निराकार ज्योति स्वरूप हैं। शिव का अर्थ है कल्याणकारी और लिंग का अर्थ है चिंह्न। अर्थात् कल्याणकारी परमात्मा को साकार में पूजने के लिए शिवलिंग का निर्माण किया गया। शिवलिंग को काला इसलिए दिखाया गया क्योंकि अज्ञानता रूपी रात्रि में परमात्मा अवतरित होकर अज्ञान-अंधकार मिटाते हैं। परमपिता परमात्मा शिव देवताओं एवं समस्त मनुष्यात्माओं के पिता हैं। उनका दिव्य अवतरण होता है। वे अजन्मा, अभोक्ता, अकर्ता

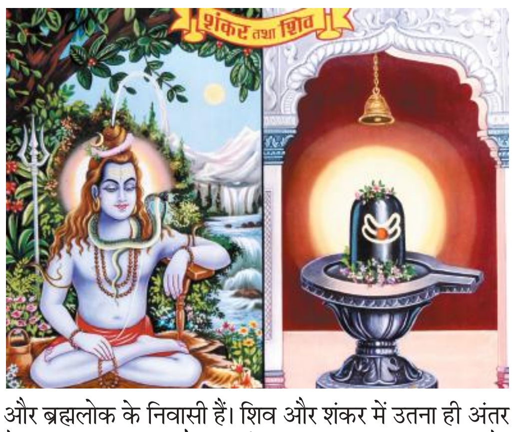

और ब्रह्मलोक के निवासी हैं। शिव और शंकर में उतना ही अंतर है जितना कि पिता और पुत्र में। शंकर का आकारी शरीर है। शंकर, परमात्मा शिव की रचना हैं। परमात्मा शिव ने शंकर को इस कलियुगी सृष्टि के विनाश के लिए रचना की है। यही वजह है कि शंकर हमेशा शिवलिंग के सामने तपस्या करते हुए दिखाए जाते हैं। वह हमेशा ध्यान की मुद्रा में रहते हैं। यदि शंकर स्वयं भगवान होते तो उन्हें ध्यान करने की क्या जरूरत है? ध्यानमग्न शंकर की भाव-भंगिमाएं एक तपस्वी के अलंकारी रूप हैं। शंकर और शिव को एक समझ लेने के कारण हम परमात्म प्राप्तियों से वंचित रहे। अब पुनः अपना भाग्य बनाने का मौका है।

परमात्मा ज्योति स्वरूप हैं: स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद ने भी अपने शिव स्त्रोत में शिव की वंदना इन शब्दों में की है

परमात्मा सृष्टि की स्थापना, विनाश और पालन करने वाले हैं, जो अपरंपार महिमा वाले हैं। उन पारलौकिक परमात्मा को मेरे जीवन की श्रद्धा-ज्योति समर्पित है। परमात्मा शिव निराशा और अंधकार से सदा परे ज्योतिस्वरूप हैं। उन्हें अखंड प्रभु-स्मृति द्वारा ही अनुभव किया जा सकता है। वे ही कलियुगी, विकारी सृष्टि के विकार मिटाने वाले प्रभु हैं।

धर्मग्रंथ के पन्नों से सभी धर्मग्रंथ व शास्त्रों में मिलता है परमात्मा के दिव्य अवतरण का उल्लेख, परमसत्ता की मान्यता

इन बदलावों से साफ दिख रही परिवर्तन की झलक

{ चाहे प्रकृति का बिगड़ता संतुलन हो या समाज से विलुप्त होतीं मानवीय संवेदनाएं, कहीं न कहीं विश्व परिवर्तन का स्पष्ट इशारा कर रही हैं। समय रहते इसे गंभीरता से समझने की जरूरत है। क्योंकि यह बदलाव ईश्वरीय संविधान का हिस्सा है, जो मानव के हित में है। }

पूर्व में वेद-पुराण और महापुरुषों द्वारा कही गईं बातें वर्तमान में हो रही हैं चरितार्थ

श्रीमद्भगवत गीता के मुताबिक

अवजानन्ति माँ मूढ़ा मानुषी तनुमाश्रितम्, परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्।

भावार्थः परमात्मा ने गीता में नौवें अध्याय के 11वें श्लोक में कहा है कि मनुष्य तन का आश्रय लेने वाले मूढ़मति लोग मुझको नहीं जानते हैं। यद्यपि मैं महेश्वर (परमात्मा) हूं तो भी व्यक्त भाव वाले वे लोग मुझे नहीं पहचान सकते हैं। वहीं यजुर्वेद (32/2) का वचन है कि सर्वे निमेषा जज्ञिरे विद्युत पुरूषाधि अर्थात् वह विद्युत पुरुष ज्योतिर्लिंग प्रगट हुआ जिससे निमेष जज्ञिरे विद्युत पुरुषादधि अर्थात् वह विद्युत पुरुष प्रगट हुआ जिससे निमेष कला का आदि का प्रारंभ हुआ।

***

शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च। ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम्।।

(43)।। (अष्टादश अध्याय)

भावार्थः मन का शमन, इन्द्रियों का दमन, पूर्ण पवित्रता, मन-वाणी और शरीर को इष्ट के अनुरूप तपाना, क्षमाभाव, मन, इंद्रियों और शरीर की सर्वथा सरलता, आस्तिक बुद्धि अर्थात् एक इष्ट में सच्ची आस्था, ज्ञान अर्थात् परमात्मा की जानकारी का संचार, विज्ञान अर्थात् परमात्मा से मिलने वाले निर्देशों की जागृति एवं उसके अनुसार चलने की क्षमता, यह सब स्वभाव से उत्पन्न हुए ब्राह्मण के कर्म हैं अर्थात् जब स्वभाव में यह योग्यताएं पाई जाएं, कर्म धारावाही होकर स्वभाव में ढल जाए तो वह ब्राह्मण श्रेणी का कर्त्ता है।

चारों युगों में एक बार होता है सर्वोच्च सत्ता का अवतरण

चारो युगों में एक बार ही इस सृष्टि पर परमात्मा का अवतरण होता है। जब यह दुनिया पतित भ्रष्टाचारी बन जाती है। आसुरीयता का बोलबाला हो जाता है। ऐसे समय में परमात्मा को इस सृष्टि पर आकर पुनः नई दुनिया की स्थापना का महान कार्य करना पड़ता है। जब दुनिया भौतिकता की चकाचौंध में इतनी डूब जाती है कि उसके ज्ञान नेत्र बंद हो जाने के कारण सत्य और असत्य का कुछ पता ही नहीं चलता है। तब परमात्मा आकर अपने बच्चों को स्वयं की एवं परमात्मा की पहचान बताते हैं। उनके असली गुणों और कर्त्तव्यों की याद दिलाते हैं। इस तरह आत्मा और परमात्मा का यहां मिलन होता है, जो वर्तमान में जारी है।

प्रकृति भी दे रही है परिवर्तन का संकेत

सृष्टि के आदि में प्रकृति अपने मूल स्वरूप व सतोप्रधान थी। हर तत्व मानव के लिए सुखदायी था। समय के साथ प्रकृति भी बदलती गई। आज असमय ही बाढ़, भूकंप, तूफान, आगजनी आम बात हो गई है। ये सभी बातें प्रकृति के बदलाव अर्थात् परिवर्तन की ओर संकेत कर रही हैं। संहार के बाद नवसृजन सृष्टि चक्र का नियम है।

परमाणु बम बनाम विश्व शांति...?

साइंस ने जहां जीवन को आसान बना दिया है वहीं परमाणु बम, मिसाइल, रॉकेट की फौज ने दुनिया को मौत के मुहाने पर खड़ा कर दिया है। एक तरफ तमाम देश परमाणु शक्ति बढ़ाने में लगे हैं और दूसरी ओर विश्व शांति की बात कर रहे हैं। एक साथ दोनों कैसे संभव हैं। ऐसे में विश्व शांति की राह ही एकमात्र उपाए है।

मानवीय मूल्यों का पतन और पुनर्स्थापना

व्यक्ति के कर्म इतने निन स्तर पर पहुंच गए हैं जिनकी कभी कल्पना नहीं की होगी। धर्मशास्त्रों में धर्मग्लानि के जो चिंह्न बताए गए हैं उससे भी निन दर्जे की घटनाएं सामने आ रही हैं, जिसने हमारे मानव होने पर ही प्रश्न चिंह्न लगा दिया है। सृष्टि के विनाश और नवयुग के सृजन का ये वही संधि काल संगमयुग चल रहा है।

शाश्वत नियमः अति का अंत व नवसृजन

अति सर्वत्र वर्जयेत अर्थात् अति सभी जगह वर्जित है। अति के बाद हर चीज का अंत निश्चित है। गीता में वर्णित धर्मग्लानि के पांच चिंह्नों से भी बदस्तर स्थिति में आज परिवार, समाज और दुनिया के हालात बन गए हैं। गीता में अपने वायदे अनुसार परमपिता शिव परमात्मा का अवतरण हो चुका है, जिनके मार्गदर्शन में नईदुनिया की तैयारी जारी है।

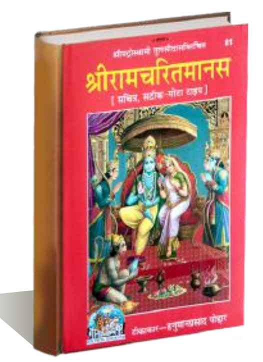

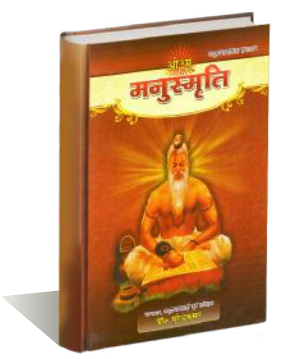

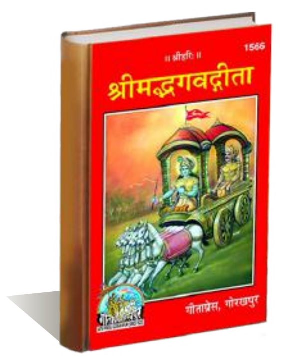

रामायण
वह बिना पैर के चलता है...

बिनु पद चलई सुनई बिनु काना।
कर बिनु करम करई विधि नाना।
आनन रहित सकल रस भोगी।
बिनु बानी बकता बड़ जोगी (शिव के लिए)।।

वह निराकार परमात्मा (ब्रह्मलोक निवासी) बिना ही पैर के चलता है, बिना कान के सुनता है, बिना हाथ के नाना प्रकार के काम करता है। फिर भी हजारों भुजा वाला है, बिना मुंह के ही सारे (छहों) रसों का आनंद लेता है और बिना वाणी के बहुत योग्य वक्ता है। वही हमारा परमात्मा राम है।

मनुस्मृति
जो हजारों सूर्य के समान तेजस्वी है...

मनुस्मृति में भी लिखा है कि सृष्टि के आरंभ में एक अंड प्रकट हुआ, जो हजारों सूर्य के समान तेजस्वी और प्रकाशमान था। उन्होंने एक दिव्य पुरुष को ज्ञान दिया जो नई सृष्टि की स्थापना के निमित्त बना। शिवपुराण में धर्मसंहिता में लिखा है कि कलियुग के अंत में प्रलय काल में एक अद्भुत ज्योतिर्लिंग प्रकट हुआ जो कि कालाग्नि के समान ज्वालामान था। वह न घटता, न बढ़ता था, वह अनुपम था और उस द्वारा ही सृष्टि का आरंभ हुआ। ग्रंथों में परमात्मा के अवतरण की बात कहीं गई है।

महाभारत
ब्रह्मा की बुद्धि में प्रवेश कर दिया ज्ञान

सबसे पहले जब यह सृष्टि तमोगुण और अंधकार से आच्छादित थी, तब एक अण्डाकार ज्योति प्रकट हुई और वह ज्योतिर्लिंग ही नए युग की स्थापना के निमित्त बना। उसने कुछ शब्द कहे और प्रजापिता ब्रह्मा को अलौकिक रीति से जन्म दिया। महाभारत के शांतिपर्व श्लोक संख्या 337-24-25 में लिखा है कि 'भगवान ने नई सृष्टि की रचना के लिए ब्रह्मा की बुद्धि में प्रवेश किया'। उन्हें ज्ञान देकर अपने जैसे अन्य दिव्य आत्माओं को तैयार करने की जिम्मेदारी सौंपी।

मैं ब्रह्मा के ललाट से प्रकट होऊंगा...

शिवपुराण में अनेक बार यह उल्लेख आया है कि भगवान शिव ने पहले प्रजापिता ब्रह्मा को रचा और फिर उनके द्वारा सतयुगी सृष्टि की स्थापना की। शिवपुराण के कोटी रुद्र संहिता के 42वें अध्याय में लिखा है 'मैं ब्रह्माजी के ललाट से प्रगट होऊंगा' अर्थात् 'समस्त संसार पर अनुग्रह करने के लिए शिव ब्रह्माजी के ललाट से प्रगट हुए और उनका नाम रुद्र हुआ। परमात्मा शिव ने ही ब्रह्मा मुख द्वारा नई सृष्टि रची। जब ब्रह्मा द्वारा सतयुगी सृष्टि रचने का कार्य तीव्र गति से नहीं हुआ, तब शिव ने ब्रह्मा की काया में प्रवेश किया। ब्रह्मा को पुनर्जीवित कर उनके मुख द्वारा नई सृष्टि रचने का कार्य आरंभ किया'। यही वजह है कि शास्त्रों में ब्राह्मणों को ब्रह्मामुख वंशावली कहा गया। साथ ही स्पष्ट लिखा है कि 'सर्व कामनाओं को पूर्ण करने वाले परमात्मा का चिंह्न शिवलिंग ही है।

***

शिवलिंग शिव के निराकार स्वरूप का प्रतीक

(विद्येश्वर संहिता... अध्याय 5-8)

भगवान शिव ही ब्रह्मरूप होने के कारण निष्कल (निराकार) कहे गए हैं। रूपवान होने के कारण उन्हें सकल भी कहा गया है। इसलिए वे सकल और निष्कल दोनों हैं। शिव के निष्कल निराकार होने के कारण ही उनकी पूजा का आधारभूत लिंग भी निराकार ही प्राप्त हुआ है अर्थात् शिवलिंग शिव के निराकार स्वरूप का प्रतीक है। इसी प्रकार शिव के सकल या साकार होने के कारण उनकी पूजा का आधारभूत विग्रह साकार प्राप्त होता है अर्थात् शिव का साकार विग्रह उनके साकार स्वरूप का प्रतीक होता है। सकल और अकल रूप होने से ही वे ब्रह्म शब्द से कहे जाने वाले परमात्मा हैं। यही कारण है कि सब लोग लिंग (निराकार) और मूर्ति (साकार) दोनों में सदा भगवान शिव की पूजा करते हैं।

***

सर्व के नाथ हैं शिव

आज कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिनका उत्तर जानना हमारे लिए बेहद जरूरी है। जैसे परमपिता परमात्मा को ज्योतिर्लिंगम क्यों कहा? क्योंकि परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप निराकार हैं। जिनका अपना कोई शरीर नहीं है। जो सदा ज्योति के समान प्रकाशमान है। परमात्मा को ज्योति स्वरूप का एक लिंग रूप बनाकर मनुष्य के सामने रखा ताकि मनुष्य अपनी भावनाएं अर्पित कर सकें। पूजा कर सकें। भारत में भी मंदिरों के नाम के पीछे भी नाथ या ईश्वर शब्द जुड़ा है। क्योंकि वह सर्व का नाथ, सर्व के ईश्वर हैं। जैसे नाथ के रूप में मान्यता है भोलेनाथ, सोमनाथ, विश्वनाथ, बबूलनाथ, अमरनाथ आदि। ईश्वर के रूप में-गोपेश्वर, विश्वेश्वर, पापकटेश्वर, रामेश्वर, महाकालेश्वर, ओंकारेश्वर। सर्व का नाथ और ईश्वर वही एक परमात्मा शिव हैं। उपरोक्त बातों से स्पष्ट है कि इस दुनिया की सभी मनुष्य आत्माओं के पालनहार, सभी देवों के भी देव महादेव एक परमपिता शिव परमात्मा ही हैं। परमपिता परमात्मा शिव का पूजन व गायन ज्योति स्वरूप में विश्वभर में सभी जगह मिलता है। सभी धर्मगुरुओं ने भी उनकी महिमा में गुणगान किया है।

एक अद्भुत और अनोखा विद्यालय ▸ ब्रह्माकुमारीज़ की शिक्षा के चार मुख्य सब्जेक्ट- ज्ञान, योग, सेवा और धारणा

यहां लिखी जा रही नई दुनिया की 'पटकथा'

वर्ष 1936 में दादा लेखराज के लिए परमात्मा ने कराए नई दुनिया के दिव्य साक्षात्कार

■ शिव आमंत्रण

आबू रोड । सन् 1937 में हीरे-जवाहरात के प्रसिद्ध व्यापारी दादा लेखराज के तन को परमात्मा ने अपने अवतरण का आधार बनाया। हैदराबाद सिंध (अभी पाकिस्तान में) में इस मिलन का एक छोटे स्तर से प्रारंभ हुआ। क्योंकि तब परमात्मा को एक ऐसे सशक्त संगठन की जरूरत थी जिससे लोगों को यह एहसास हो सके यह कोई साधारण नहीं बल्कि परमात्मा की शिव शक्ति सेना है। चूंकि परमात्मा को भारत और वंदे मातरम् की गाथा को भी चरितार्थ करना था, इसलिए माताओं-बहनों के सिर पर ज्ञान का कलश रखा और उन्हें इस महाभियान में अग्रणी बनाया। परमात्मा तो जानी जाननहार है, इसलिए उन्होंने ब्रह्मा वत्सों की भविष्य की स्थिति को शक्तिशाली और परमात्मा के अवतरण को पुख्ता करते हुए 14 वर्ष तक घोर तपस्या कराई। संस्था के प्रारंभ में जुड़ने वाली अधिकतर माताएं- बहनें और कुछ भाई 14 वर्ष तक घर से बाहर नहीं निकले और तपस्या करके स्वयं को इतना शक्तिशाली बना लिया कि आज उनके तप व त्याग की शक्ति दूसरों को भी आध्यात्म और परमात्म मिलन के पथ पर अग्रसर कर रही है।

परमात्मा ने स्वयं दिया था अपना परिचय...

वर्ष 1936 की बात है दादा लेखराज एक दिन वाराणसी में अपने मित्र के यहां गए थे। वहां उन्हें रात्रि में अचानक इस दुनिया के भयंकर महाविनाश का साक्षात्कार होने लगा। ऐसे विनाशक हथियारों का साक्षात्कार हुआ जो उस समय इसकी परिकल्पना तक नहीं थी। इसके बाद नई दुनिया की स्थापना के लिए आसमान से उतरते देवी-देवताओं का भी साक्षात्कार हुआ। दादा लेखराज को यह बात समझ नहीं आई। जब दादा अपने घर पहुंचे और अपने कमरे में बैठे थे तो उनके अंदर निराकार परमपिता परमात्मा ने प्रवेश कर साक्षात्कार कराया। साथ ही स्वयं परमात्मा ने अपना परिचय दिया -

निजानंद् स्वरूपम् शिवोहम्, शिवोहम्।
आनंद स्वरूपम् शिवोहम्, शिवोहम्।
प्रकाश स्वरूपम् शिवोहम् शिवोहम्।

इस परिचय के साथ स्वयं परमपिता परमात्मा ने यह आदेश दिया कि अब तुम्हें एक नई दुनिया बनानी है। यही से शुरू हुआ परमपिता परमात्मा के दुनिया बदलाव का गुप्त कार्य जो आज तक अनवरत चल रहा है।

1950 में माउंट आबू में स्थानांतरण

भारत-पाकिस्तान के बंटवारे के बाद परमात्मा के निर्देशानुसार यह संस्था राजस्थान के एकमात्र हिल स्टेशन माउण्ट आबू में स्थानांतरण हुआ। यहां छोटे से रूप में संस्था के सेवा कार्यों की शुरुआत हुई। माउण्ट आबू से ही पूरी दुनिया में ईश्वरीय निर्देशन में आध्यात्म और परमात्मा के अवतरण के आने की सूचना और विश्व परिवर्तन के कार्य का शंखनाद हुआ। संस्था का मुख्यालय माउण्ट आबू में ही है। 84 वर्ष पूर्व प्रारंभ हुई संस्था आज पूरे विश्व में एक वट वृक्ष का रूप ले चुकी है। संस्था के पूरे विश्व के 140 मुल्कों में करीब 4200 से भी ज्यादा सेवाकेन्द्र हैं। संस्थान में समर्पित रूप से 46 हजार से अधिक बहनें विश्व परिवर्तन के महान कार्य में तन-मन-धन से लगी हुई हैं। वहीं 12 लाख से ज्यादा लोग रोज आध्यात्मिक नियमों का पालन करते हुए इस मार्ग पर निरंतर आगे बढ़ते जा रहे हैं। इनके माध्यम से मनुष्यात्माओं को परमात्मा के आने की सूचना और उनसे शक्ति लेकर अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने की सेवा अनवरत जारी है। संस्था से जुड़े नियमित विद्यार्थी परमात्मा के महावाक्यों का श्रवण, मनन-चिंतन कर अपने जीवन को संवारने में जुटे हैं। साथ ही राजयोग के माध्यम से उनका परमात्मा से सीधा संवाद होता है। राजयोग और आध्यात्मिक शिक्षा द्वारा मनुष्य नर से नारायण व नारी से लक्ष्मी जैसा बनने का श्रेष्ठ कर्म कर रहे हैं।

14 वर्ष तक कराई कठिन तपस्या...

परमात्मा तो जानी जाननहार है, इसलिए उन्होंने ब्रह्मा वत्सों की भविष्य की स्थिति को शक्तिशाली और परमात्मा के अवतरण को पुख्ता करते हुए 14 वर्ष तक घोर तपस्या कराई। संस्था के प्रारंभ में जुड़ने वाली अधिकतर माताएं- बहनें और कुछ भाई 14 वर्ष तक घर से बाहर नहीं निकले और तपस्या करके स्वयं को इतना शक्तिशाली बना लिया कि आज उनके तप-त्याग की शक्ति दूसरों को भी अध्यात्म व परमात्म मिलन के पथ पर अग्रसर कर रही हैं।

पिछले 84 वर्ष से जारी है मिलन...

पूरी दुनिया में केवल एक ही ऐसी जगह है जहां आत्मा-परमात्मा के मिलन का साक्षात् महाकुम्भ होता है। यह सच है, यह मिलन पिछले 84 वर्षों से लगातार जारी है। ज्ञान की गंगा में ज्ञान स्नान कर वे सभी लोग देवत्व की राह पर चल पड़े हैं। इस महामिलन के साक्षी किसी भी भाई-बहन से पूछें तो सभी का एक ही उत्तर मिलता है, नर से नारायण व नारी से लक्ष्मी बनना है। इतना ऊंचा मुकाम है, फिर भी इसकी सफलता उनके नयनों में साफ झलक जाएगी।

संस्था हर क्षेत्र में निभा रही जिम्मेदारी

आध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन की शिक्षा के साथ ब्रह्माकुमारीज संस्थान द्वारा सामाजिक जिम्मेदारी के तहत कई अभियान चलाए जा रहे हैं। किसानों के कल्याण के लिए देशव्यापी अभियान जैविक-यौगिक खेती, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, महिला सशक्तिकरण, नशामुक्ति, स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, पौधारोपण आदि अभियान चलाए जा रहे हैं। साथ ही देशभर के कई विश्वविद्यालयों के साथ मिलकर युवाओं के लिए मूल्यनिष्ठ शिक्षा पाठ्यक्रम कोर्स चलाए जा रहे हैं।

परमात्मा शिव स्वयं सिखा रहे हैं राजयोग

राजयोग को योगों का राजा कहा जाता है। इसमें सभी योगों का सार समाया हुआ है। राजयोग अंतर्जगत की एक यात्रा है। इसके माध्यम से हम अपने विचारों को एक सकारात्मक चिंतन की ओर ले जाते हैं और श्रेष्ठ दिशा देते हैं। चिंतन श्रेष्ठ होने से मन की कार्यकुशलता बढ़ जाती है और कर्मों में प्रवीणता आने लगती है। एक अयास के बाद हमें जीवन जीने की श्रेष्ठ कला मिल जाती है। राजयोग आत्मदर्शन और परमपिता परमात्मा से संवाद कराकर राजाई पद दिलाने वाला सर्वश्रेष्ठ योग है।

स्थानीय सेवाकेंद्र का पता

पत्र व्यवहार का पता

संपादक ▸ **ब्र.कु. कोमल,** ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया एवं पब्लिक रिलेशन ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो ▸ 9414172596, 9413384884, 9179018078
Email ▸ shivamantran@bkivv.org
▸ bkkomal@gmail.com

● **प्रकाशक एवं मुद्रकः** ब्र.कु. करुणा द्वारा प्रकाशित एवं डी.बी. सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित ● सलाहकार संपादकः **प्रो. कमल दीक्षित** ● संपादकः **ब्र.कु. कोमल** ● संयुक्त संपादकः **ब्र.कु. पुष्पेन्द्र** ● **RNI No.: RJHIN/2013/53539**

प्रेरणापुंज

दादी गुलजार (हृदयमोहिनी)
मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान

सर्वस्व त्यागी और बेहद के वैरागी बनने का समय

■ शिव आमंत्रण

आबू रोड ❙ बाबा कहते हैं कि समय को तो देख रहे हो, कितना बदल रहा है। हमको क्या करना है, वह सोचो। ऐसे नहीं कि समय आएगा तो हम तैयार हो जाएंगे। फिर तो समय हमारा शिक्षक हुआ, परमात्मा नहीं। परमात्मा ने इतना समझाया तो हम नहीं बदले और समय जब आया तो बदल गए तो मेरा कौन शिक्षक हुआ? परमात्मा हुआ या समय हुआ।

कितने नशे की बात है कि बड़े से बड़ा शिक्षक खास परमधाम से हमको पढ़ाने के लिए आता है, इतने तो हम सिकीलधे हैं, लाड़ले हैं, ऊंचे हैं जो खास परमात्मा हमारे लिए आता है पढ़ाने के लिए। यह साधारण बात तो नहीं है ना! तो बाबा ने कहा कि सर्वस्व त्यागी और बेहद के वैरागी बनो। यह मोह, यह लोभ क्यों होता है? वैराग्य की कमी। बेहद का वैराग्य, ऐसे नहीं एक चीज मुझे अच्छी नहीं लगती है या कोई ने धोखा दिया उससे वैराग्य आ गया। वह कोई वैराग्य थोड़े ही हुआ, वह तो बैर हुआ। उसको वैराग्य कैसे कहेंगे। वैराग्य माना ज्ञान से, समझ से, दिल से, वैराग्य एक से लगाव हो एक से नहीं हो, तो वह बेहद का तो नहीं हुआ न, हद हुई। सेवा तो करते हैं और सेवा तो होनी ही है। पहले हम सेवा के पीछे दौड़ते थे, अभी सेवा हमारे पीछे-पीछे दौड़ रही है। कितने निमंत्रण मिलते हैं। सेवा तो बहुत की है, लेकिन बाबा कहते अपने को रियलाइज करो। सेल्फ रियलाइज करो- मैं आत्मा हूं यह तो समझ लिया, लेकिन आत्मा जो सम्पूर्ण बननी चाहिए वह सम्पूर्ण आत्मा हूं? ऐसे आत्मा तो पापात्मा भी है, रजोगुणी आत्मा भी है लेकिन हम कौन सी आत्मा हैं? तो सेल्फ में यह रियलाइजेशन किया कि मैं आत्मा हूं लेकिन जो हमारा लक्ष्य है कि मैं बाप समान बनूं, संपूर्ण बनूं। हमारा जो टाइटल है- सर्वगुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी... वह यहां ही तो बनना है ना। डिग्री तो अभी लेनी है, फिर स्टेटस वहां मिलेगा। अपने को रियलाइज करना है कि मैं सचमुच बाप समान बनी हूं?

हमारा हर कर्म श्रीमत के प्रमाण हो...

जो भी काम करो चेक करो कि ब्रह्मा बाबा को यह प्यारा है। अगर ब्रह्मा बाबा को प्यारा नहीं है तो मैं नहीं कर सकती हूं। हमारा बहुत सहज पुरूषार्थ है, मेहनत करने की जरूरत ही नहीं है, क्योंकि हमको फॉलो करना है। कोई अपना रास्ता तो बनाना ही नहीं है। जो सोचें कि पता नहीं यह ठीक होगा या नहीं होगा। मंजिल मिलेगी कि नहीं मिलेगी, यह सोचने की जरूरत ही नहीं है। हमें तो जो ब्रह्मा बाबा ने किया है उसके कदम के पीछे कदम रखना है। शिव बाबा ने सवेरे से रात्रि तक के लिए श्रीमत दी हुई है। कैसे उठो, कैसे काम करो, कैसे भोजन बनाओ, कैसे खाओ, कर्म करते हो, व्यापार करते हो या दफ्तर में जाते हो तो कर्मयोगी कैसे बनो? हर कर्म के लिए बाबा की श्रीमत है। तो जो श्रीमत है उसी प्रमाण चलते चलो तो मुश्किल क्या है? सोचो ही क्यों? अमृतवेले आप अपने जीवन की गाड़ी श्रीमत की पटरी पर चढ़ा दो तो सहज चलती रहेगी। सोचने की या मेहनत करने की जरूरत ही नहीं है, सिर्फ कॉपी करनी है। परन्तु कहते हैं कि नकल करने का भी अक्ल चाहिए। हम सभी तो नालेजफुल हैं, इसलिए जो काम शुरू करो - उसमें पहले सोचो कि बाबा की श्रीमत हर कर्म के लिए क्या है?

बाबा ने सहर्ष बृज कोठी के लिए स्वीकृति दे दी

■ शिव आमंत्रण

आबू रोड ❙ बाबा हमें सिंध में कहा करते थे कि 'बच्चे, अंत में आप ब्रह्मा-वत्स पर्वतों पर जाकर तपस्या करेंगे और महाराजाओं की कोठियों में रहेंगे।' बाबा के ये पूर्व-वचन मेरे मन में बार-बार प्रबल प्रेरणा के रूप में उठते और समझाते कि यह आबू ही वह पर्वत है और 'बृज कोठी' तो एक महाराजा (भरतपुर के महाराज) की कोठी है ही। अतः यही वह पर्वत है जिसके बारे में बाबा पहले से ही हमें बार-बार कहते रहे हैं कि 'अन्त में आप पांडव पर्वत पर तपस्या करते-करते शरीर छोड़ेंगे।' बाबा यह भी कहा करते कि 'जब इस कलियुगी विकारी सृष्टि का महाविनाश होगा तो ब्रह्मा-वत्स उस पहाड़ी पर ही होंगे तथा वहां से ही विनाश देखेंगे।' अतः मुझे प्रबल प्रेरणा हुई कि हो न हो यह वही पहाड़ी है और यही वह राजा की कोठी है जहां हम शिव-शक्तियों और पांडवों को अर्थात् ब्रह्मा-वत्सों को आकर तपस्या भी करनी है और रहना भी है। अतः मैंने अहमदाबाद जाकर बाबा को कराची में टेलिफोन किया और बृज कोठी के बारे में उनसे राय मांगी। तब बाबा ने इस स्थान के लिए सहज ही स्वीकृति दे दी। जैसे कि बाबा के मन में यहां आने की योजना पहले से ही हो और हमें केवल ढूंढने की सेवा का अवसर और खुशी प्राप्त करने के लिए ही भेजा हो।'

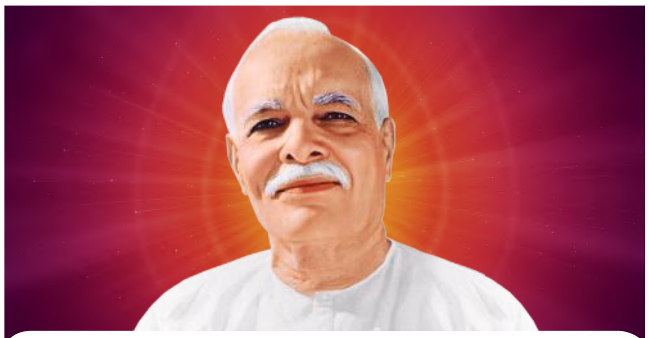

रियल लाइफ

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा
संस्थापक, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

बाबा कहा करते कि 'जब इस कलियुगी विकारी सृष्टि का महाविनाश होगा तो ब्रह्मा-वत्स उस पहाड़ी पर ही होंगे और वहां से ही विनाश देखेंगे।' इस पर मुझे प्रबल प्रेरणा हुई कि हो न हो यह वही पहाड़ी है....

जब शिव बाबा ने सिंध (अब पाकिस्तान में) से 'यज्ञ' को भारत में स्थानांतरित करने का निर्देश दिया, तब आबू में बृज कोठी लेने तथा ब्रह्मा-मुख-वंशावली के आवास-निवास आदि के लिए उचित प्रबंध करने के लिए सब से पहले एक विशेष अनुभवी ब्रह्माकुमार को भेजा गया था। वे यज्ञ-वत्सों में से एक मुख्य भाई थे जिन्हें शिव बाबा ने 'विश्वकिशोर' नाम दिया था। सचमुच जैसा उनका नाम था वैसा उनका पुरुषार्थ भी था। वे भविष्य में विश्व के मालिक श्रीनारायण के किशोर बनने-जैसा ही पुरुषार्थ किया करते थे। वे इस ईश्वरीय ज्ञान की धारणा से पहले कोलकाता में एक उच्च और नामचीन जवाहरी थे। लौकिक नाते से वे बाबा के भतीजे थे। उन्हें बाबा के प्रति अगाध स्नेह और अत्यंत सम्मान था। बाबा ने ही उन्हें जवाहरात का धंधा सिखाकर निपुण जवाहरी बनाया था। जब बाबा को ईश्वरीय साक्षात्कार हुए थे और उन्होंने जवाहरात के धंधे से अवकाश प्राप्त किया था तब 'विश्व किशोर' जी के मन में भी यह संकल्प था कि 'मैं भी बाबा का अनुकरण करूंगा।' उन्होंने बाबा से अपनी हार्दिक इच्छा प्रगट भी की थी, परन्तु बाबा ने उन्हें निर्देश दिया था कि 'अभी थोड़ा ठहरो। कुछ समय के बाद आपको भी पूर्ण रूपेण प्रभु-अर्पण होने की राय दे दी जाएगी।' विश्व किशोर जी तो हर हाल में राज़ी थे, जैसे बाबा उन्हें चलाएं वैसे ही चलने में उनको खुशी होती थी। कुछ ही वर्षों के बाद उन्हें इस ईश्वरीय ज्ञान यज्ञ में समर्पण होने की प्रेरणा मिल गई और वे सपरिवार इस ईश्वरीय यज्ञ में समर्पित हो गए थे। उनकी युगल जिनका नाम ब्रह्माकुमारी संतरी था, भी लगन और तन्मयता व त्याग से सेवा में लग गईं। विश्व किशोर जी भी बहुत अनुभवी, विचारवान, निश्चय बुद्धि, त्याग-वृत्ति वाले, वफादार और ईमानदार थे। वे जब-कभी लोगों से यज्ञ के किसी कार्य के लिए मिलते तो उनसे पूछते थे- 'आपका इस संस्था में क्या स्थान है? विश्वकिशोरजी कहते मैं तो माताओं-बहनों का सेवक हूं। वे पत्र-व्यवहार में भी 'ईश्वरीय सेवक' लिखकर हस्ताक्षर करते थे। यूं थे तो वे इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के एक प्रबंधक। भारत में जब आकर उन्होंने भरतपुर के महाराजा की कोठी (बृज कोठी) को यज्ञ-वत्सों के विद्या-अध्ययन तथा आवास-निवास के लिए ले लिया (सन् 1950) तब यज्ञ पिता, यज्ञ-माता तथा सभी यज्ञ-वत्स आबू में पधारे थे। **क्रमशः...**

सत्यता- पवित्रता से होंगे प्रत्यक्ष

शक्तिस्वरूपा

दादी जानकी
मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

■ शिव आमंत्रण

आबू रोड ❙ हम सब हद से फ्री हो अपने स्वभाव-संस्कार, चाहे दूसरे के स्वभाव-संस्कार, चाहे दूसरे के स्वभाव-संस्कार के वश भी हैं तो विश्व सेवा हमारे से नहीं हो सकती है, क्योंकि सिर्फ देवता धर्म वालों की सेवा नहीं करनी है, सारी विश्व परमात्मा की संतान है। विश्व को शांति चाहिए तो हम आत्मा- धर्म, जाति, रंग, भाषा भेद सबसे न्यारी होंगी तो विश्व सेवा हो सकती है। जितना हम निराधार रहेंगे, उतना विश्व सेवा हो सकती है। जितना हमारी निरहंकारी स्थिति होगी तब विश्व सेवा हो सकती है। बाहर वाले लोगों ने जरा सा अहंकार हमारे में देखा या गुस्सा देखा तो कभी भी वह बाबा के नजदीक नहीं आएगा। बाहर वालों को भी अभिमान या गुस्सा अच्छा नहीं लगता है। अंदर की सत्यता और पवित्रता प्रत्यक्ष हमारे अंदर है तो विश्व सेवा होगी। सत्यता और पवित्रता को प्रत्यक्ष करने वाली है 'नम्रता'। अगर नम्रता है तो निरहंकारीपना है। बाबा ने हम सबका ध्यान खिंचवाया और कहा कि बच्चे ग्लोब (विश्व) आपके हाथों में है। सारे विश्व हमारे हाथों में आने वाली है, परन्तु उनको जब शान्ति मिलेगी, तब तुम्हारे हाथों में आएगी। तुम अभी ग्लोब के ऊपर बैठो तो हम जितना ग्लोब के ऊपर रहेंगे तो बाबा के पास रहेंगे। साथ रहेंगे तो विश्व सेवा हो सकती है। लेकिन अगर इधर-उधर अनेक बातों में घूमते रहेंगे तो विश्व सेवा कैसे हो सकती है? उसके लिए बहुत फुर्सत चाहिए। ऐसे नहीं हमारे पास टाइम नहीं है। टाइम बहुत है, सिर्फ बुद्धि को फालतू बातों में बिजी नहीं करो। तो एक सच्चा सेवाधारी, दूसरा बेहद का सेवाधारी, तीसरा विश्व सेवाधारी बनो।

हमारे पास टाइम नहीं है। टाइम बहुत है, सिर्फ बुद्धि को फालतू बातों में बिजी नहीं करो।

जो मैं और मेरे-पन से मुक्त हैं। वही निमित्त हैं। बाबा के मधुर बोलों को दिल में समाकर सम्पूर्णता और संपन्नता को समीप लाना है, तब ही बाप समान जो हमारे अंदर योग्यताएं हैं वह आना संभव है। मीठे ज्ञान सागर बाबा ने हमें इतने ज्ञान रत्न दिए हैं, जो अंदर में सब भरे हुए हैं। सिर्फ उसका थोड़ा मंथन करें, अमल में लाएं। सिर्फ हम मुख से नहीं कहें कि यही ज्ञान सही है, यही योग सच्चा है। वह इस मुख से कहें कि यही सत्य ज्ञान है। बाबा ऐसे सुंदर बोल उच्चारण करते हैं जो दिल को लग जाते हैं। हम तो बीज से निकले हैं, हम तना हैं हमारे से यह जो शाखाएं निकलेंगी उनको शक्ति यहां से भरनी है। जब भी आएं द्वापर में आएं या कलियुग में आएं वह भी लाखों-करोड़ों के आधारमूर्त हैं। धर्म की स्थापक आत्माएं जो हैं उनके आधार पर लाखों-करोड़ों आत्माएं हैं। वह आत्माएं भी शक्ति यहां से लेंगी। धर्म पिताओं को भी धर्म स्थापन करने की शक्ति यहां से मिलेगी। बाकी जो ब्राह्मण बने हैं वह देवता बनेंगे। हम देवताओं में भी ऊंच पद पाने वाले हैं। हमें सदा स्मृति किसकी है? बाप को याद करना है लेकिन सिमरण पद का है जरूर। अंतकाल जो नारायण सिमरे- इतना ऊंच पद पाने का सदा ख्याल रहे। भले और ज्ञान-योग कितना भी हो परन्तु अंतकाल में ख्याल उसी का आता है, जिसके साथ प्यार होता है तो हम बेहद के बाबा के बच्चे हैं। बेहद का वर्सा मिल रहा है, बेहद की खुशी है, नशा है। बाबा कहते तुम तना हो, तना से ही वृक्ष को शक्ति मिलती है। तो इस नए वर्ष में यहां से वहां भावना भर करके जाओ कि सफल करते, सफलता पानी है। सफलतामूर्त बनना है और सब पुरानी बातों से मुक्त हो जाएं। अभी हमको मुक्ति वर्ष मनाना है जो निमित्त बनी हुई आत्माएं हैं वह बाबा के स्नेह के बंधन में बंधी हुई हैं। बाबा उनसे जो कराए वह करने के लिए आत्मा बंधी हुई है और वहीं बंधन प्यारा है। वहीं बंधन हमको सुख देता है। बाप ने हमको अपने प्यार के बंधन में बांध लिया है और सब बंधनों से मुक्त कर दिया है, तो दिल क्या कहती है? शुक्रिया बाबा आपका। बस श्रीमत पर चलना, श्रेष्ठ पद पाना। बुद्धिवानों की बुद्धि बैठा हुआ है, सब आपेही काम करता है।

संपादकीय

000

ज 00000000000000

000000 0 00
00000000
00000000
00000000
0000000 00

बोध कथा | जीवन की सीख

भगवान का साथ

एक लड़की चर्च में जाती है और फादर से कहती है मेरे पिताजी बहुत बीमार हैं, किसी भी वक्त मौत हो सकती है, क्या आप मेरे घर आ सकते हो? फादर कहते हैं हां, क्यों नहीं मैं आता हूं। जब फादर घर पहुंचते हैं, तो वहां एक बुजुर्ग व्यक्ति बिस्तर पर लेटा मिलता है और सामने एक खाली चेयर रखी होती है। पादरी को लगता है शायद मेरे लिए चेयर रखी है, तो वह पूछता है कि आपको पता था मैं आने वाला हूं। बुजुर्ग ने कहा मुझे तो पता ही नहीं कि आप आने वाले हो। अच्छा! तो चेयर क्यों रखी हुई है? बुजुर्ग बोला- आप बैठो, मैं एक राज की बात बताता हूं। ये चेयर वाली बात मैंने अपनी बेटी को भी नहीं बताई। मैं रोज चर्च जाता और प्रार्थना करता था लेकिन मन नहीं लगता था केवल एक दिखावा था, एक ढोंग था। अंदर से एक खालीपन था। एक बार अपने मित्र से मैंने कहा कि मैं भगवान से तो बहुत दूर हूं। केवल दिखावा मात्र है, मैं क्या करूं? तो मित्र ने कहा तुम अपने बिस्तर के सामने एक खाली चेयर रख दो और सोचो कि यह भगवान बैठा हुआ है। उससे अपने दिल की सारी बातें बताओ, तबसे मैंने ये काम चालू किया रोज दो-तीन घंटा मैं खाली चेयर रखता हूं, सोचता हूं कि भगवान है, इससे मैं बात करते रहता हूं। तब से मेरा जीवन बहुत खुशमय हो गया है। इस घटना के बाद एक दिन वह लड़की फादर से फिर से मिलती है। फादर उससे पूछते हैं पिता जी कैसे हैं? वो कहती है पिताजी ने कल रात को ही शरीर छोड़ दिया। फादर पूछते हैं उनकी मृत्यु कैसे हुई और मन की स्थिति कैसी थी। उसने कहा कि पिताजी जब गुजर रहे थे तो उन्होंने मुझे बुलाया, गले लगाया और खाली चेयर के पास जाकर उस पर माथा रख दिया। बस वहीं शरीर छोड़ दिया, आत्मा निकल गई। यह सुनते ही फादर मन ही मन कहते हैं कि ऐसी मृत्यु हर एक की हो।

संदेश: जब हम सच्चे दिल से ईश्वर को माता-पिता, गुरु या फिर मित्र के रूप में याद करते हैं तो वह हमारी मदद के लिए बंधा हुआ है।

सत्य की साधना के संपूर्ण सतोगुणी स्वरूप और ज्ञान के अनुकरण में श्रद्धा की उपस्थिति जरूरी

जीवन का मनोविज्ञान भाग - 31

डॉ. अजय शुक्ला
बिहेवियर साइंटिस्ट, गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर
(स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

उपदेश के अनुपालन में आज्ञाकारिता

शिव आमंत्रण, आबू रोड I स्वयं के अस्तित्व की स्वीकारोक्ति मानव जगत के मध्य अत्यधिक जिज्ञासा से संबंधित स्थिति होती है, जिसमें आंतरिक खोज और उससे जुड़ी मनोदशा समाधान के लिए सदा प्रेरणा का आधारभूत माध्यम बनती है। जीवन को श्रेष्ठतम पात्रता प्रदान करने के लिए उपदेश के अनुपालन में आज्ञाकारिता के साथ धर्मगत आदेश के प्रति निष्ठावान होना आवश्यक होता है, तभी आचरण की व्यावहारिक पुष्टि सुनिश्चित होती है। सत्य की साधना के संपूर्ण स्वरूप का अवगाहन करने पर सतोगुणी प्रवृतियों का विकास करना सहज हो जाता है, जिसमें स्वभाव एवं संस्कार के परिष्कार के लिए आंतरिक आत्मबल सर्वाधिक महत्वपूर्ण करक होता है। श्रद्धा की उपयोगिता का पक्ष ज्ञान के अनुकरण तथा अनुसरण की विधाओं में परिलक्षित होता है जो अनुशासन की प्रक्रिया से होकर गुजरता है और मनुष्य को ईमानदारी के प्रति पूर्णतः निष्ठावान बना देता है। धर्मगत आचरण की व्यावहारिकता इतनी सशक्त होती है कि वह जीवन के आध्यात्म को आत्मसात करने में पुरुषार्थ के विभिन्न पहलुओं की ओर व्यक्ति को गतिशील कर देती है।

धर्मगत आदेश द्वारा आचरण की व्यावहारिक पुष्टि

ज्ञान के अनुकरण में श्रद्धा की उपस्थिति

अनुशासन की प्रक्रिया में ईमानदारी की उपयोगिता

जीवन में आध्यात्म का आज्ञाकारी भाव जगत

जीवन में पवित्रता की अवधारणा के आधारभूत पक्ष वास्तविकता के स्तर पर मस्तिष्क की ऊर्जा और हृदय की भावनात्मक अभिव्यक्ति के साथ विश्वसनीयता एवं सतर्कता को सदा व्यावहारिकता की दृष्टि से संपूर्णता हेतु स्वीकार करते हैं। महान आत्मा बन जाने की पहल को मूर्तरूप प्रदान करना मानवीय स्वभाव का मूलभूत तत्व होता है, जिसमें- सत्यं वद के साथ धर्मम चर से संबंधित सिद्धांत और व्यवहार जीवन में क्रियान्वयन की आवश्यकता पर बल देते हैं। धर्मगत आदेश का अनुपालन जहां व्यक्ति को विनम्रता की गहन पृष्ठभूमि से अवगत कराते हुए- मातृ देवो भवः की उच्चता को धारण करने हेतु अनुप्राणित करता है। वहीं धरती की उपमा को मातृत्व की विराटता से समाने की शक्ति को भी सुनिश्चित करता है। मानवीय संवेदनशीलता के श्रेष्ठतम पक्ष की स्थिति आकाश की उच्चता में सन्निहित रहती है, जिसमें छत्रछाया का आभामंडल- पितृ देवो भवः के सानिध्य में मार्गदर्शक की भूमिका से सृजित होता है। पुरुषार्थ द्वारा आत्मिक सतोप्रधानता से युक्त मनः स्थिति- श्रद्धावान लभते ज्ञानं को सदा ही रेखांकित करती है। जिसमें आचार्य देवो भवः से संबद्ध जिज्ञासु प्रवृतियां समाधानमूलक गुण को समाजोपयोगी बनाने में मददगार बनती हैं।

मानवीय मूल्य का अर्जन करने की धर्मगत जिज्ञासु प्रवृति व्यक्ति को अंतर्मन की चेतना में ज्ञानार्थ के आगमन और सेवार्थ के प्रस्थान का मंतव्य यथार्थ रीति से आत्मसात कराने में सिद्धस्थ होती है। जीवन में वेद वाक्य- श्रद्धावान लभते ज्ञानं की अवधारणा मानव को श्रेष्ठतम संकल्प एवं विकल्प का जब वृहद् स्वरूप प्रदान करती है, तब चिंतन की धारा में आत्मिक शक्ति का केंद्र दृढ़ प्रतिज्ञा के सत्य धारणा स्वरूप को स्वीकार करने में प्रेरणात्मक भूमिका निभाता है। स्वयं के उत्थान में पुरुषार्थ की उपयोगिता निष्पक्षता के साथ गतिशील हो जाए उसके लिए समर्पण की स्थितियां नैसर्गिक तरीके से व्यक्ति को पूज्य स्वरूप की उच्चता तक पहुंचा देती है। जीवन की सहजता और सरलता जब विनम्रता की पृष्ठभूमि में कार्यरत होती है, तब व्यक्तिगत महानता का स्वरूप विराटता की भव्यता में गतिशीलता के साथ परिलक्षित होता है। स्वयं के अस्तित्व की स्वीकारोक्ति आत्मिक आनंद का कारक बनता है, क्योंकि व्यक्तिगत खोज के समाधान के पश्चात् आत्मिक शक्ति एवं गुण अनुभूतिगत स्वरूप की व्यावहारिकता में परिवर्तित हो जाते हैं।

प्रेरक विचार Spiritual THOUGHTS

मंदिर वही पहुंचता है जो धन्यवाद देने जाता है, मांगने नहीं।

आदिगुरु शंकराचार्य
अद्वैत वेदांत के प्रणेता, भारत

अगर 'मनुष्य' का मन 'शांत' है, 'चित्त' प्रसन्न है, हृदय 'हर्षित' है, तो निश्चय ही ये अच्छे कर्मों का 'फल' है।

स्वामी दयानंद सरस्वती
संस्थापक, आर्य समाज

वर्षों से खोज रहे सवालों का माउंट आबू में मिला जवाब

मेरी कलम से

जितेंद्र सिंह राजपूत
टैक्स सलाहकार, बीना, जिला-सागर (मप्र)

■ शिव आमंत्रण

आबू रोड I वर्ष 2007 में पहली ब्रह्माकुमारीज संस्थान के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय माउंट आबू राजयोग मेडिटेशन शिविर में आना हुआ। यहां के पवित्र वातावरण, शांति और एक अद्भुत ऊर्जा से मेरे अंतर्मन को असीम शांति की अनुभूति हुई। यहां तीन दिन शिविर में गहराई से आत्मा-परमात्मा, कर्म सिद्धांत, सृष्टि चक्र आदि का ज्ञान मिला। ईश्वर को लेकर मेरे मन में जो भी सवाल थे उन सभी का जवाब यहां आकर मिल गया। जिन सवालों के जवाब मैं कई वर्षों से खोज रहा था लेकिन संतुष्टिपूर्ण जवाब कहीं नहीं मिल रहा था, लेकिन यहां आकर राजयोग मेडिटेशन के बारे में गहराई से जानकर सारे कन्फ्यूजन समाप्त हो गए। ब्रह्माकुमारीज के बीना सेवाकेंद्र पर राजयोग मेडिटेशन का कोर्स करने के बाद राजयोग के नियमित अभ्यास से मेरा जीवन पूरी तरह बदल गया। पहले जहां गुस्सा आता था अब वह शांति में बदल गया। यह देखकर मेरी पत्नी श्रीमति रश्मि बहुत प्रभावित हुईं। साथ ही वह इस ज्ञान को जानकर इतनी प्रभावित हो गईं कि माउंट आबू में ही रहने की जिद करने लगीं। जीवन में राजयोग अपनाने के बाद मेरी पारिवारिक सुखमय जीवन की नई यात्रा प्रारंभ हो गई।

मेरे जीवन का अनुभव है कि जब हम सबकुछ परमात्मा को अर्पण कर अपना कर्म पूरी सच्चाई-सफाई के साथ करते हैं तो घर में जो धन आता है उसमें दुआएं भी शामिल होती हैं जो हमारी सफलता के नए रास्ते खोलती हैं। परमात्मा के आशीर्वाद से आज लौकिक जीवन में दिनोंदिन सफलता मिल रही है। साथ ही कारोबार भी अच्छा चल रहा है। ब्रह्माकुमारीज के ज्ञान से मेरा पूरा जीवन बदल गया, मैं बार-बार परमात्मा का शुक्रिया अदा करता हूं कि मैं कितना भाग्यशाली हूं जो आपने मुझे चुना, अपना बच्चा बनाया। वह लोग बहुत भाग्यशाली होते हैं जिन्हें इस जीवन में प्रभु का प्यार, प्रभु का साथ मिल जाए। जिनका रोज सुबह-सुबह उठते ही परमात्मा पिता से संवाद हो, उनका आशीर्वाद मिले। इस ज्ञान से मुझे कर्मफल का सच्चा ज्ञान मिला। पिछले 13 वर्षों से हम पति-पत्नी राजयोग का अभ्यास करते हुए संयमित जीवन जी रहे हैं और जीवन सुख-शांति और आनंद के साथ व्यतीत हो रहा है।

पहले जहां गुस्सा आता था अब वह शांति में बदल गया। यह देखकर मेरी पत्नी श्रीमति रश्मि बहुत प्रभावित हुईं। साथ ही वह इस ज्ञान को जानकर इतनी प्रभावित हो गईं कि माउंट आबू में ही रहने की जिद करने लगीं।

एक बार जरूर समझें राजयोग...

मेरा शिव आमंत्रण, समाचार पत्र के माध्यम से सभी भाई-बहनों से आग्रह है कि जीवन में एक बार जरूर ब्रह्माकुमारीज का ज्ञान समझने की कोशिश करना चाहिए। लोगों में ब्रह्माकुमारीज को लेकर गलत धारणाएं हैं। श्रीमद् भागवत गीता में जो ज्ञान परमात्मा ने दिया है वहीं सच्चा ज्ञान दिया जा रहा है। यहां अंधश्रद्धा, अंधविश्वास की कोई बात नहीं है। सारा ज्ञान सैद्धांतिक, वैज्ञानिक हर कसौटी पर खरा है। परमात्मा का इस धरा पर अवतरण हो चुका है यह बात सत्य है और उससे संवाद करने का तरीका राजयोग है।

जीवन प्रबंधन

बी.के. शिवानी
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ, अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर और ब्रह्माकुमारीज़ की टीवी ऑइकॉन गुरुग्राम, हरियाणा

■ शिव आमंत्रण

परमात्मा कहते हैं- आपका हर क्षण नया हो

परमात्मा सिखाते हैं कि नए दिन का भी इंतजार नहीं करना, आपका हर क्षण नया होना चाहिए। तब हमारी मन की स्थिति आगे बढ़ती जाएगी

आबू रोड । हम बड़े दिनों से इंतजार कर रहे थे कि 2020 कब खत्म होगा। क्योंकि हमने कहा 2020 साल ही अच्छा नहीं था। हम इंतजार कर रहे थे 2021 आएगा तो जीवन बदल जाएगा, परिस्थितियां बदल जाएंगी, मन की स्थिति बदल जाएगी। हमने सोचा हमारी मन की स्थिति, हमारी खुशी, हमारे मन की शक्ति और शांति, परिस्थितियों पर, लोगों पर निर्भर है। जैसे एक बच्चा पूछता है आपको क्या लगता है मेरा परीक्षा में क्या होगा? तो हम उससे कहते हैं, जैसी तैयारी होगी, वैसा ही तो होगा। हम यह नहीं कहते कि अगर एग्जाम आसान होगा तो अच्छा होगा और मुश्किल होगा तो कैसे अच्छा होगा। हम परीक्षा पर ध्यान केंद्रित नहीं करते, हम तैयारी पर फोकस करते हैं। 2020 में हमारी परीक्षा मुश्किल हो गई थी, लेकिन हमारी तैयारी कैसी थी? 2021 शुरू हो गया, पर हमें क्या पता है कि इस साल कौन-सी परीक्षा आएगी। चाहे वो विश्व में हो, देश, शहर, मोहल्ले, परिवार या व्यक्तिगत जीवन में हो, मेरे शरीर पर हो, क्या मुझे पता है कि 2021 मेरे लिए कौन-सी बातें लेकर आ रहा है। इस साल की परीक्षा कैसी होगी।

अब फोकस करते हैं अपनी तैयारी पर, परीक्षा पर नहीं। ये नहीं सोचना 2021 कैसा होगा। महत्वपूर्ण यह है कि हमारे मन में कैसा होगा। क्योंकि जैसा मन में होगा वही तो जीवन की गुणवत्ता होती है। जीवन वो नहीं है, जो हमारे साथ होता है। जीवन यह है कि जो होता है उसके प्रति हमारा नजरिया, हमारे शब्द और व्यवहार कैसे हैं। इसलिए आज से हम इंतजार नहीं करेंगे। इंतजार से जीवन नहीं बदलता, इंतजाम से बदलता है।

आत्मिक शक्ति ही जीवन की क्वालिटी

हम सब सोच रहे होंगे कि नए साल में कौन-सी नई आदतें, नए संस्कार जीवन में अपनाएंगे। हर साल प्लान बनाते हैं और बहुत बार लागू कर अपने जीवन में परिवर्तन लाते हैं। वो प्लान हम किसी भी दिन बना सकते हैं। छोटी-छोटी आदतें, बातें, छोटे-छोटे व्यवहार, सोचने का तरीका, ये मेरी आत्मिक शक्ति को घटा सकते हैं। जितनी मेरी आत्मिक शक्ति होगी, वो मेरी जीवन की क्वालिटी होगी। आत्मिक शक्ति यानी मेरी तैयारी। जीवन की हर परिस्थिति का सामना करने के लिए मेरी तैयारी कैसी है। हम उन छोटी-छोटी बातों को देखते हैं, जिनसे हम आत्मा की शक्ति बढ़ा सकते हैं, जैसे -जब हमें अपने शरीर का ध्यान रखना है तो हम छोटी-छोटी बातें करते हैं। जल्दी उठते हैं, रात को जल्दी सोते हैं, अपनी डाइट में बदलाव लाते हैं।

रोज लाएं अपने अंदर परिवर्तन

एक चीज याद रखें कि एक महान परिवर्तन लाने के लिए कुछ बहुत बड़ा नहीं करना पड़ता, लेकिन छोटे-छोटे परिवर्तन रोज करने हैं। परमात्मा कहते हैं हर क्षण आपका नया हो। परमात्मा सिखाते हैं कि नए साल का इंतजार नहीं करना, नए दिन का भी इंतजार नहीं करना, आपका हर क्षण नया होना चाहिए। तब हमारी मन की स्थिति आगे बढ़ती जाएगी। उसी को अगर गणित की भाषा में समझें तो जो आज हम हैं, अगर एक साल तक ऐसे ही रहते हैं, तो हमारे अंदर कोई बदलाव नहीं आता। यानी हम 1 पर ही रहते हैं और 365 यानी कुछ नहीं बदलता। लेकिन अगर हम अपने अंदर एक फीसदी भी परिवर्तन लाते हैं और उस एक फीसदी को रोज लाते हैं, तो एक साल के अंदर हमारे अंदर बदलाव आ जाएगा।

एक फीसदी ऊपर बढ़ाकर रखें

अब हमें लगता है कि अगर कुछ नहीं भी किया तो हम जैसे आज वन हैं, 365 दिन के बाद हम वन ही होंगे। लेकिन ऐसा होगा नहीं, क्योंकि अगर हम वन परसेंट ऊपर नहीं उठते हैं तो संभव है कि हम थोड़ा-सा नीचे चले जाएंगे। क्योंकि वातावरण का प्रभाव, लोगों की स्थिति का प्रभाव, परिस्थिति का प्रभाव पड़ता है। हम अकेले तो नहीं हैं ना। परिस्थितियां कैसी होंगी नहीं पता, लोग कैसे होंगे नहीं पता, उनका व्यवहार कैसा होगा नहीं पता, तो ये बदलाव का असर कम होने की बहुत आशंका है। हमारी सुरक्षा इसी में है कि हम अपना एक फीसदी ऊपर बढ़ाकर रखें। हर रोज वो एक फीसदी ऊपर बढ़ाते रहें। रोज छोटे-छोटे बदलाव, जो हम अपने अंदर लेकर आएंगे, तो सोचो 365 दिन में कितना बदलाव होगा। अपनी मन की स्थिति में रोज छोटा परिवर्तन करें। जब हम ये करेंगे तो हमें ये नहीं सोचना पड़ेगा कि 2021 कैसा होगा, 2022 कैसा होगा। हम इंतजार नहीं करेंगे। परीक्षा कैसी होगी, हम ये नहीं सोचेंगे। हमारा ध्यान सिर्फ और सिर्फ अपनी तैयारी पर होगा।

अलविदा डायबिटीज

बीके डॉ. श्रीमंत कुमार
ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू

डायबिटीज में वजन का बढ़ना

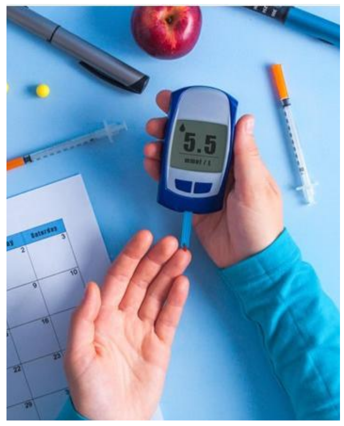

■ शिव आमंत्रण

आबू रोड । शारीरिक वजन कम करने के लिए हमारे पूरे दिन के भोजन में कम से कम 1000 से 1200 कैलोरी होना आवश्यक है। 1000 कैलोरी से कम खाने से थोड़े दिन तक कोई प्रभाव नहीं होगा, परंतु लंबे समय के बाद शारीरिक प्रक्रिया में नुकसान पहुंचेगा। इसलिए वजन कम करने के पुरुषार्थी नित्य भोजन में कम से कम 1000 कैलोरी सेवन अवश्य करें। अब हम देखते हैं, हमारे कौन से कौन से खाद्य पदार्थ में कितनी कैलोरीज होती है। इससे हमें जानकारी मिलेगी कि हमने सारे दिन में कितनी कैलोरीज खाया, इसे ही कैलोरी काउंटिंग कहा जाता है।

खाद्य पदार्थ	कैलोरी/100 ग्राम)
पानी, विटामिन्स, रेशाएं	0
हरी व पतेदार सब्जिया	20-25
आलू	100
गाजर	40
चुकंदर	40
मूली	25
लहसुन	150
प्याज	40
सलजम	30
सूरण	80
शकरकंद	80
सेव, नाशपाति, संतरा, अमरूद, पपीता, बेर	50
आम	75
चीकू	100
केला	100
अंगूर	75
अनानस	50
तरबूजा	20
खरबूजा	20
सीताफल	100
नारियल	450
अनार	65

- अनाज में चावल, गेहूं, बाजरा, ज्वार, रागी, मक्काई, उवेटम, साथ ही दालों में मूंग, अरहर, तुअर, मसूर, चने, उड़द, सोयाबीन, राजमा, छोले, काला चना चढ़ली सभी में प्रति 100 ग्रा. में 100 कैलोरी ऊर्जा होती है।
- तली हुई चीजें और मिठाइयां: समोसा, कचौरी, पूड़ी, पकौड़े, पकवान, जलेबी, गुलाब जामुन, रसगुल्ला, कलाकंद आदि में प्रति 100 ग्राम में 500 कैलोरी होती है।
- तेल, घी, मक्खन, बटर, चीज में 100 ग्राम में 1000 कैलोरी
- सूखे मेवे, खजूर, अंजीर, किसमिस में 100 ग्राम में 300 कैलोरी
- सूखे बीजः मूंगफली, बादाम, अखरोट, काजू, पिस्सा में 100 ग्राम में 600 कैलोरी
- गाय के दूध में प्रति 100 में 60 कैलोरी, बकरी के में 70, भैंस के दूध में 100, स्कीमड में 50, दही में 300 और पनीर, छेना, चीज, मेवा, रबड़ी में प्रति 100 ग्राम में 500 कैलोरी होती है। वहीं छाछ और लस्सी में 25 कैलोरी होती है।

संपर्क: बीके जगतजीत मो. 9413464808 पेशेंट रिलेशन ऑफिसर, ग्लोबल हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर, माउंट आबू, जिला- सिरोही, राजस्थान

माइंड पॉवर ऑफ YOUTH

यदि आप सच्चे दिल से परमात्मा को याद करते हैं तो वह सदा हमारी सहायता के लिए बंधा हुआ है।

बीके दीपिका
मालथौन, सागर (मप्र)

जब बाबा ने भाई बनकर मेरी मदद की

सागर (मप्र) । वर्ष 1998 में मेरे दादाजी-दादीजी और बुआ जी ब्रह्माकुमारीज से जुड़े थे तो बचपन में मैं भी उनके साथ सेवाकेंद्र पर जाती थी। वहां मुझे मुरली क्लास, प्रवचन कुछ समझ नहीं आते थे लेकिन प्रोग्राम में डांस करना बहुत पसंद था। लेकिन घर में कभी भी डांस नहीं करती थी, इस बात पर कभी-कभी मेरी पिटाई भी हो जाती थी। ये सिलसिला चलता रहा। एक समय ऐसा भी आया जब पिताजी ने सेंटर जाने पर प्रतिबंध लगा दिया। एक दिन सेवाकेंद्र प्रभारी बीके छाया दीदीजी ने पिताजी को फोन किया और कहा कि दीपिका को सेंटर भेजो तो पिताजी ने सहर्ष ही सहमति दे दी। तब (वर्ष 2010) से सेंटर पर ही समर्पित रूप से सेवाएं दे रही हूं। एक बार हमारे यहां दो समुदायों के बीच दंगा हो गया, संयोग से उसी दिन बड़ी दीदी ने कहा कि आपको गैरतगंज जाना है। मैं जिस बस में जा रही थी उसमें एक भी सवारी नहीं थी। बस कुछ आगे बढ़ी तो रास्ते में ड्राइवर और कंडक्टर भय का माहौल बनाने लगे। इस पर मैंने तुरंत बाबा का आह्वान किया और दुर्गा स्वरूप व विघ्न विनासक स्वरूप का स्वमान शुरू कर दिया। बाबा को भाई के रूप में याद किया। उस दिन मुझे एहसास हुआ कि यदि आप सच्चे दिल से परमात्मा को याद करते हैं तो वह सदा हमारी सहायता के लिए बंधा हुआ है। अचानक पूरी बस सवारियों से भर गई। भगवान कहते हैं बच्चे, मेरे कदम पर एक कदम बढ़ाओ मैं हजार कदम बढ़ाऊंगा, यह बात मैंने जीवन में अनुभव की है।

बीके कल्पना
एमए जियोग्राफी, मालथौन, सागर (मप्र)

छोटी बहन के समर्पण समारोह से मिली प्रेरणा

सागर (मप्र) । बचपन से ही भक्तिभाव के संस्कार थे। मुझे रामायण पढ़ने का बहुत शौक था। आसपास मोहल्ले और संबंधियों के यहां जहां भी रामायण का पाठ होता था तो मैं उसमें शामिल होकर पूरी लगन से बिना खाए-पीए पाठ करती थी। साथ ही बहुत पूजा-पाठ, व्रत आदि भी किए। मेरे दादा-दादीजी और बुआ जब ब्रह्माकुमारीज से जुड़े तो मैं भी अपनी छोटी बहन दीपिका के साथ सेंटर जाने लगी। मेरे मन में बचपन से था कि कुछ ऐसा करना है जो अब तक खानदान में किसी ने नहीं किया हो, इसी उद्देश्य को लेकर मैंने आईएएस बनने की ठानी। इसके साथ ही मैंने तैयारी भी शुरू कर दी। मेरी आईएएस की तैयारी चल ही रही थी कि जुलाई 2013 में छोटी बहन दीपिका के समर्पण समारोह में माउंट आबू जाना हुआ। माउंट आबू में मुझे अलौकिक शांति की अनुभूति हुई। साथ ही यहां एक साथ हजारों ब्रह्माकुमारी बहनों और उनका दिव्य, पवित्र जीवन देखकर मैंने मन ही मन संकल्प किया कि मुझे भी अपना जीवन ऐसा बनाना है। यदि मैं आईएएस बन भी गई तो अपना एक जीवन सफल कर सकती हूं। लेकिन परमात्मा के कार्य में जीवन दिया तो जन्मो-जन्म का भाग्य बन जाएगा। कल वही आईएएस मुझे नमन करेंगे। माउंट आबू से लौटकर मैं भी छोटी बहन की तरह सेंटर पर समर्पित हो गई। तब से सागर के बाद मालथौन सेवाकेंद्र पर सेवाएं दे रही हूं। मैंने जीवन में जो राह चुनी आज इस पर गर्व होता है और परमात्मा पिता का दिल से धन्यवाद देती हूं। वाह मेरे प्यारे बाबा वाह।

स्वयं को आत्मा न समझने से आते हैं पांच विकार और दुःखः

दीप प्रज्ज्वलित कर कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन करते हुए बीके सरोज तथा अन्य अतिथि।

■ शिव आमंत्रण । कुरुक्षेत्र (हरियाणा) । अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज़, कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड, भारत रत्न गुलजारीलाल नंदा नीति एवं दर्शनशास्त्र और कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के संयुक्त प्रयास से 'श्रीमद्भगवत गीताः भ्रष्टाचार एवं अपराध के प्रति शून्य सहिष्णुता का प्रतीक' विषय पर चर्चा का आयोजन किया गया। इस ऑनलाइन कॉन्फ्रेंस में ब्रह्माकुमारीज संस्थान के अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन, माउण्ट आबू से वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके ऊषा और कर्नाटक के सिरसी सेवाकेंद्र प्रभारी बीके वीणा ने पांच विकारों और दुख का मूल कारण स्वयं को आत्मा न समझना बताया। अंत में विश्व शांति धाम की प्रभारी बीके सरोज ने सभी का आभार व्यक्त किया। इसी उपलक्ष्य में 5 दिवसीय ध्यान योग शिविर का आयोजन ब्रह्माकुमारीज द्वारा श्रीकृष्ण आयुष विश्वविद्यालय समेत 5 संस्थाओं द्वारा किया गया। इसमें हरियाणा योग परिषद के अध्यक्ष जयदेव आर्य विशेष रूप से मौजूद रहे। बीके सरोज ने राजयोग का अभ्यास कराया।

बच्चों के लिए पोषण का महत्व बताया

■ शिव आमंत्रण । आबूरोड । ब्रह्माकुमारीज संस्थान द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केंद्र रेडियो मधुबन 90.4 एफएम द्वारा समय-समय पर सामाजिक सरोकार से जुड़े कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इसके तहत 'पोषण की पोटली' कार्यक्रम के अंतर्गत आबूरोड के नागपुरा गांव में राजकीय उप्रा विद्यालय में 'शारीरिक और मानसिक विकास में पोषण का महत्व' विषय पर कार्यक्रम हुआ। इसमें कक्षा पहली से छटवीं के बच्चों ने भाग लिया।बच्चों को स्वेटर भी वितरित किए गए। स्कूल के प्रधानाध्यापक गोपाल राजपुरोहित एवं अचपुरा सीनियर सेकंडरी स्कूल प्रधानाचार्य कांतिलाल, रेडियो मधुबन के स्टेशन हेड बीके यशवंत पाटिल, कम्युनिटी रिपोर्टर आरजे पवित्र, टेक्नीकल हेड रोहित, प्रोडक्शन हेड बीके कृष्णा व नागपुरा सरपंच प्रीति उपस्थित रहे।

राजयोग मेडिटेशन तन- मन की औषधी

भवानी मंडी जर्नलिस्ट एसो. के नव नियुक्त पदाधिकारियों का किया सम्मान

दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ करते अतिथि।

■ शिव आमंत्रण । भवानी मंडी (राजस्थान) । जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ राजस्थान जार के भवानी मंडी में नवनियुक्त पदाधिकारियों का आदित्य विहार कॉलोनी स्थित सेवाकेंद्र पर स्वागत किया गया। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके कुसुम ने कहा कि स्वस्थ व खुशहाल जीवन के लिए राजयोग कारगर औषधि है। सभा को महिला जागृति अध्यक्षा संगीता जैन व प्रवीण गुप्ता ने भी संबोधित किया। समारोह में जार के जिलाध्यक्ष भंवरसिंह कुशवाहा, मीडिया प्रवक्ता हेमंत जायसवाल सहित कई मीडियाकर्मी उपस्थित रहे।

शुक्रिया करो तो जिंदगी बन जाएगी आसान

लोधी रोड सेवाकेंद्र की ओर से ई-संगोष्ठी का आयोजन

■ शिव आमंत्रण

नई दिल्ली । ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के लोधी रोड सेवाकेन्द्र द्वारा 'आभार ही सर्वोत्तम व्यवहार' विषय पर ई-संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें प्रेरक वक्ता बीके पीयूष ने कहा कि हमें दूसरों से तारीफ की अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए। जिंदगी में हमें शिकायत की जगह शुक्रिया करना चाहिए। इससे जिंदगी बहुत आसान हो जाती है। संसार की 90 प्रतिशत समस्याएं जुबान के असंतुलित लहजे से पैदा होती हैं। हर लफ्ज़ महकता हुआ गुलाब है, लहजे के फर्क से इसे तलवार न बनाओ। किसी ने कहा है कि झुकता वही है जिसमें जान है, अकड़ना तो मुर्दे की पहचान है। किसी के सामने हम किसी का अभिवादन करते हैं, हम किसी का शुक्रिया अदा करते हैं तो हमारा अहंकार समाप्त हो जाता है, इसलिए हमारी भारतीय संस्कृति में बड़ों को प्रणाम करना सिखाया जाता है। नरौरा परमाणु विद्युत केन्द्र के मुख्य अधीक्षक सुधीर शेलके ने कहा कि जब हम दूसरों का आभार व्यक्त करते हैं तो देहभान खत्म होता है हमें दुआएं मिलती हैं। दुआओं की लेनदेन करने से हर तरीके से सफलता का मार्ग प्रशस्त होता है। संस्था के स्पार्क प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक बीके श्रीकांत ने कहा कि किसी से थोड़ी सी भी मदद मिले उनका आभार व्यक्त करना चाहिए। आभार और क्षमादान हमारे जीवन के दो महतवपूर्ण आयाम हैं।

सुबह उठते ही भगवान का धन्यवाद करें...

स्पार्क प्रभाग दिल्ली की क्षेत्रीय संयोजिका बीके सरोज ने कहा कि आभार का मतलब है कद्र करना। हम दूसरे का आदर तभी कर पाएंगे जब हमारे अंदर उनके प्रति स्वीकार्यता का भाव होगा। किसी के प्रति हम आभार व्यक्त करते है तो हमारे अंदर सकारात्मक सोच जागृत होती है। सवेरे उठते ही भगवान को हमें प्रदान की हुई हर चीज के लिए धन्यवाद कहने से हमारे अंदर एक श्रेष्ठ भाव का जागरण होता है और सूक्ष्म रूप से वह चीज भी आपको डबल लाभ देती है। यहां तक कि पानी को श्रेष्ठ भाव से पीकर देखो कितना लाभ होता है। लोधी रोड सेवाकेंद्र प्रभारी बीके गिरिजा ने कहा कि दूसरों को दिल से प्रोत्साहित करना सबसे अच्छा व्यवहार माना जाता है। इससे सामने वाले की दुआएं मिलती हैं। धन्यवाद शब्द आपको तनाव खत्म करता है। आपसी संबंध ठीक करता है और हमारा आत्मबल बढ़ाता है।

'युवाओं का सही मार्गदर्शन जरूरी'

सभा को संबोधित करते हुए कोल्हापुर जिले के पालक मंत्री सतेज पाटील।

■ शिव आमंत्रण

कोल्हापुर (महाराष्ट्र)। आज का युवक सोशल मीडिया और इंटरनेट के जाल में फंसकर अपनी क्रिया शक्ति का गलत उपयोग कर रहा है उसे सही मार्गदर्शन आवश्यकता है। यह बात सेवाकेंद्र पर आयोजित कार्यक्रम में जिले के पालक मंत्री सतेज पाटील ने कही। पुणे-मीरा सोसायटी सबजोन के अंतर्गत पीस पैलेस, कोल्हापुर सेवाकेंद्र के 24वें वर्धापन दिन के उपलक्ष्य में गुण गौरव समारंभ का आयोजन किया गया। इसमें शिक्षक संघ के आमदार जयंत आसगांवकर व प्रसिद्ध उद्योगपति बाबा भाई सहित सेवाकेंद्र से जुड़े 35 भाई-बहनें का सम्मान संचालिका बीके सुनंदा ने किया।

सकारात्मक दृष्टिकोण है अपने आप में एक औषधि : बीके मंजू

■ शिव आमंत्रण । बिलासपुर (छग) । सकारात्मक दृष्टिकोण अपने आप में एक औषधि है। यदि हम कोई भी कार्य सकारात्मक सोच के साथ करते हैं तो उसकी शक्ति कई गुना बढ़ जाती है। ध्यान, आसन, प्राणायाम का अभ्यास सकारात्मक सोच के साथ करने से छोटे-मोटे रोग तो स्वतः ही ठीक हो जाते हैं और योगाभ्यास नियमित करने से असाध्य रोगों से बचा जा सकता है। उक्त विचार महिला पतंजलि व भारत स्वाभिमान के प्रशिक्षार्थियों को प्रातः कालीन योग सत्र में संबोधित करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ टिकरापारा सेवाकेंद्र प्रभारी बीके मंजू ने दिए। आपने 40 मिनट के वर्कआउट-म्यूजिकल एक्सरसाइज से योगाभ्यास की शुरुआत की, जिसमें योग प्रदर्शन के लिए मास्टर ट्रेनर बीके संदीप, बीके पूर्णिमा, बीके ईश्वरी एवं बीके नीता सहयोगी रहीं। बीके मंजू ने मेडिटेशन - योगनिद्रा का अभ्यास कराया। पिछले 33 दिन से प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे 73 साधकों को लाभ लिया।

प्रेरणादायी

आर्च बिशप डॉ. फेलिक्स मचाडो ने एक कार्यक्रम में कहा-

जानकी दादीजी आदर्श आध्यात्मिक व्यक्तित्व थीं

■ शिव आमंत्रण

वसई (महाराष्ट्र) । विश्व बंधुत्व विषय पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन के आयोजक आर्च बिशप डॉ. फेलिक्स मचाडो ने ब्रह्माकुमारीज की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी जानकी जी के साथ के अपने अनुभव सांझा करते हुए कहा कि मेरे लिए दादीजी एक आदर्श आध्यात्मिक व्यक्तित्व थीं। उनका जीवन बहुत प्रेरणादाई रहा। दादीजी के जाने से केवल ब्रह्माकुमारीज ही नहीं बल्कि पूरे विश्व को क्षति पहुंची है। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके सारिका ने आध्यात्मिक दृष्टिकोण एवं नए सुखमय विश्व की परिकल्पना को स्पष्ट किया। उन्होंने कहा कि किसी एक धर्म का प्रचार-प्रसार ब्रह्माकुमारीज नहीं करती है, बल्कि पूरी मानव जाति के उत्थान के लिए यहां परमात्मा का ज्ञान दिया जाता है, जिसका सभी धर्मों में अलग अलग रूप से गायन है। दादी जानकी को श्रद्धांजलि देते हुए सभी ने एक मिनट मौन रखा।

डॉ. मचाडो के साथ बीके सारिका व अन्य।

लोकार्पण माउंट आबू से पधारे बीके राजू भाई ने समाज के लिए किया समर्पित

भुवनेश्वर में तपस्या धाम का उद्घाटन

तपस्या धाम के उद्घाटन अवसर पर आयोजित यज्ञ कार्यक्रम में बीके राजू एवं अन्य अतिथि।

शिव आमंत्रण । भुवनेश्वर (ओडिशा) । ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के नवनिर्मित तपस्या धाम दिव्य रिट्रीट सेंटर का उद्घाटन संस्थान के मुख्यालय माउंट आबू से पधारे राजयोगी बीके राजू भाई द्वारा किया गया। इस दौरान एक यज्ञ किया गया और पेड़ लगाए गए। आयोजन में राजयोगिनी बीके लीना, बीके दुर्गेश, बीके तपस्विनी, बीके मंजु, बीके दमयंती, बीके कल्याण, बीके मिनी और डॉ. देवव्रत स्वैन सहित भुवनेश्वर उप-क्षेत्र के बीके भाई-बहन मौजूद रहे। इस दौरान ओडिशा लोकायुक्त ए. धाली, विधायक जयदेव आदि ने अपने विचार व्यक्त करते हुए संस्थान द्वारा की जा रही सेवाओं की सराहना की।

पुरी के ओम शांति ऑडिटोरियम का लोकार्पण

ऑडिटोरियम का लोकार्पण करते हुए माउंट आबू से पधारे बीके राजू भाई, एडीएम पीके साहू व अन्य।

शिव आमंत्रण । पुरी (ओडिशा) । ब्रह्माकुमारीज़ के गॉडली राजयोगा रिट्रीट सेंटर में नवनिर्मित ओम शांति ऑडिटोरियम का उद्घाटन आबू रोड मुख्यालय से पहुंचे वरिष्ठ राजयोगी बीके राजू द्वारा किया गया। इस अवसर पर बीके डॉ. शरद, पुरी सबजोन प्रभारी बीके निरुपमा, भुवनेश्वर सबजोन प्रभारी बीके लीना समेत पुरी के एडीएम पीके साहू, डिस्ट्रिक्ट प्रोजेक्ट को-ऑर्डिनेटर एसएम दास, सर्व शिक्षा अभियान के जिला परियोजना समन्वयक एसएम.दास, शांतिवन वीडियोग्राफी विभाग के बीके सूर्यमणि सहित अन्य कई विशिष्ट लोग मुख्य रूप से मौजूद थे।

श्रीमद् भागवत ज्ञानयज्ञ गीता ज्ञानयज्ञ में कथावाचक बीके कंचन दीदी ने सिखाया राजयोग

हम वर्तमान के कर्मों से लिखते हैं भविष्य

शिव आमंत्रण

कथावाचक ब्रह्माकुमारी कंचन दीदी तथा कथा का श्रवण करते भाई-बहनें।

सिकंदरा जमुई (बिहार) । प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के जमुई में नए राजयोग सेवाकेंद्र, सिकंदरा शाखा के उद्घाटन पर पांच दिवसीय श्रीमद्भागवत गीता प्रवचन का आयोजन किया गया।

गीता ज्ञानयज्ञ में कथावाचक राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी कंचन दीदी ने कथा के प्रथम दिन मैं शरीर नहीं अजर-अमर अविनाशी आत्मा हूं विषय पर प्रकाश डाला। दूसरे दिन के सत्र में परमात्मा के स्वरूप का वर्णन किया। साथ ही उन्होंने बताया कि हिंदू-मुसलमान, सिख, ईसाई, यहूदी, पारसी सभी धर्मों में किसी ने किसी रूप में परमात्मा की व्याख्या है या परमात्मा को ज्योति, प्रकाशरूप, नूर या ज्योति स्वरूप के रूप में आराधना की जाती है। तीसरे दिन कर्मों की गहन के साथ मन रूपी विमान द्वारा सतयुग की सैर कराई। उन्होंने कहा कि वर्तमान में हम जो भी हैं वह हमारे भूतकाल में किए गए कर्मों का परिणाम है। आज हम वर्तमान में जो भी कर रहे हैं वह अपना भविष्य का भाग्य लिख रहे हैं, इसलिए हमें हर घड़ी श्रेष्ठ कर्म करने चाहिए। हम सब 84 लाख योनियों में जन्म नहीं लेकर मात्र कल्प के 5000 वर्ष में अधिकतम 84 जन्म लेते हैं। अगर मानव जीवन चौरासी लाख योनियां पार करके लिया गया होता तो आज मनुष्य जानवरों से भी बदतर दुखी नहीं होता। आज मानवों की संख्या तो बढ़ रही है लेकिन मानवता नष्ट होती जा रही है।

इस मौके पर सिकंदरा थाना अध्यक्ष शिवानंद शाह, मुखिया गीता देवी, जमुई सेवाकेंद्र प्रभारी बीके कृति, लखीसराय सेवाकेंद्र प्रभारी बीके रीता, बीके विभा, बीके सीता, बीके गीता, बीके मानसी, बीके मंजू, बीके खुशबू, बीके दिव्या, बीके अन्नू, बीके सरिता, बीके कविता, बीके ऋषि, बीके नवीन सहित बड़ी संख्या में लोगों ने कथा का लाभ लिया। कथा के समापन पर तीन दिवसीय निःशुल्क राजयोग मेडिटेशन शिविर का प्रशिक्षण रखा गया है।

सूचना के लिए संपर्क करें

सामाजिक सेवाओं तथा आंतरिक सशक्तिकरण के प्रयास के साथ निकाला गया मासिक **शिव आमंत्रण समाचार पत्र** एक संपूर्ण अखबार है। इसमें आप सभी पाठकों का लगातार सहयोग मिल रहा है, यही हमारी ताकत है।

वार्षिक मूल्य 110 रुपए, **तीन वर्ष** 330
आजीवन 2500 रुपए

पत्र व्यवहार का पता

संपादक ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़ शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो 9414172596, 9413384884
Email shivamantran@bkivv.org

अंतरराष्ट्रीय समाचार

हमारी एनर्जी का संपूर्ण पृथ्वी पर पड़ता है प्रभाव

शिव आमंत्रण । लेस्टर (यूके) । ब्रह्माकुमारीज़ के हार्मनी हाउस सेवाकेंद्र पर क्रिसमस और नए साल के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसके प्रारंभ में सुंदर नृत्य नाटिका बच्चों द्वारा प्रस्तुति की गई। इस दौरान लेस्टर सेवाकेंद्र प्रभारी ने कहा कि हमारे अंदर से जो एनर्जी निकलती है वह हमारे दिमाग, मन एवं संपूर्ण पृथ्वी पर प्रभाव डालती है। यह विश्व आत्मिक भाव के नाते से एक परिवार है। इसलिए एक-दूसरे के साथ बंधुभाव, प्यार से रहें। यीशु ने भी यही संदेश दिया है। उन्होंने कहा कि यीशु भी परमात्मा के मैसेंजर हैं। वह भी हमारी तरह परमात्मा शिव के बच्चे हैं। सब आत्माओं के पिता परमपिता शिव परमात्मा हैं।

माउंट आबू में हुई दिव्य आत्मिक अनुभूति

शिव आमंत्रण । लंदन । ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा 'लिविंग द् लेगेसी ऑफ लव' विषय पर वेबीनार का आयोजन किया गया। इसमें ऑस्ट्रेलिया के डायरेक्टर बीके चार्ली ने माउंट आबू का अपना अनुभव सुनाते हुए कहा कि वहां ब्रह्माकुमारीज़ के पांडव भवन, हिस्ट्री हॉल में एक दिव्य आत्मिक अनुभूति हुई। वहां मैंने भगवान के सच्चे प्यार की अनुभूति की। तब से मेरी भगवान के प्रति लगन बढ़ती गई। इसके बाद से मेरा शरीर से मोह छूट गया और आत्मिक भाव में रहने लगा। इस आत्मभान से मेरे जीवन में बहुत सारी पुरानी आदतों को अच्छाई में बदल दिया। वास्तव में जब हम आत्मभान में रहते हैं तो अतीन्द्रिय सुख-शांति और आनंद की अनुभूति होती है। साथ ही खुद को परमात्मा के समीप महसूस करते हैं।

परमात्मा से संवाद करने की विधि है राजयोग

शिव आमंत्रण । न्यूयॉर्क । ब्रह्माकुमारीज़ के न्यूयार्क सिटी स्थित पीस विलेज सेवाकेंद्र द्वारा क्रिसमस और नए साल को लेकर ऑनलाइन सेमीनार का आयोजन किया गया। इसके शुभारंभ पर वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके डोरथी ने आध्यात्मिकता से अपने जीवन में आए सकारात्मक परिवर्तन का अपना अनुभव सुनाते हुए राजयोग मेडिटेशन की गहन अनुभूति कराई। उन्होंने कहा कि राजयोग वह विधि है जिसके माध्यम से हम सर्व आत्माओं के परमपिता शिव परमात्मा से संवाद करते हैं, उनसे मिलन मनाते हैं। परमात्मा हमें बहुत ऊंचे-ऊंचे स्वमान देते हैं जब हम उन स्वमान को जीवन में धारण कर उनका अभ्यास करते हैं तो हमें आत्मिक दिव्य शक्तियों का अनुभव होता है। साथ ही हमारा मन सशक्त और मजबूत होता है। लेकिन बहुत बार देखा जाता है कि परमात्मा जितनी ऊंची अवस्था में हमको देखते हैं उतना हम अपने को नहीं समझते हैं। इसलिए श्रेष्ठ स्थिति का अनुभव नहीं होता हैं। वह जैसा बताते हैं उस अनुसार चलेंगे तो अलग-अलग शक्तियों का अनुभव होगा। शक्तियां और खुशी असीमित रूप में मिलेगी।

देनपसार में ब्रह्माकुमारीज़ के नए भवन का भूमिपूजन

शिव आमंत्रण । देनपसार (इंडोनेशिया) । बाली की राजधानी देनपसार में स्थित ब्रह्माकुमारीज़ के पीस हाउस सेंटर के नए भवन का भूमिपूजन किया गया। इसमें इंडोनेशिया में ब्रह्माकुमारीज़ की राष्ट्रीय संयोजिका बीके जानकी ने कहा कि यहां से आध्यात्मिकता का प्रकाश संपूर्ण देश में फैलेगा। वीडियो संदेश के माध्यम से माउंट आबू के ज्ञान सरोवर अकादमी की निदेशिका बीके डॉ. निर्मला ने कहा कि नया भवन बनने से यहां से विश्वभर में परमात्मा का ईश्वरीय संदेश और राजयोग मेडिटेशन की शिक्षा का प्रचार-प्रसार हो सकेगा। बीके चार्ली व बीके फ्रैंक ने भी नए भवन के जल्द बनने को लेकर शुभकामनाएं दीं।

साइलेंसली एक्टिव रहें और आंतरिक रूप से शक्तिशाली बनें

शिव आमंत्रण । वॉशिंगटन (यूएसए) । वॉशिंगटन डीसी स्थित ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से ऑनलाइन सेमीनार का आयोजन किया गया। इसमें मेडिटेशन म्यूजियम की डायरेक्टर बीके जेना ने कहा कि व्यक्ति का वास्तविक स्वभाव सामाजिक होना है, लेकिन आज तनाव और संकोच के कारण व्यक्ति सामाजिक रूप से सम्मिलित होने से कतराता है। उन्होंने कहा कि जीवन में आध्यात्मिकता अपनाने से हमारी आंतरिक ऊर्जा और आत्मिक शक्ति बढ़ती है। इससे जहां आत्म विश्वास बढ़ता है, वहीं जीवन में आने वाली समस्याओं का सामना आसानी से कर पाते हैं।

खुद की आंतरिक चेकिंग करने की बताई विधि

शिव आमंत्रण । वैंकूवर (कनाडा) । ब्रह्माकुमारीज़ के वैंकूवर सेवाकेंद्र द्वारा चलाई जा रही ऑनलाइन सीरीज 'वैल्यूज फॉर लाइफ' के अंतर्गत आत्म अवलोकन विषय पर सेमीनार आयोजित किया गया। इसमें मलेशिया की निदेशिका बीके मीरा ने अपनी आंतरिक चेकिंग करने के कई तरीके बताए। साथ ही राजयोग मेडिटेशन द्वारा स्वयं का वास्तविक अनुभव करने का अभ्यास भी कराया।

अन्नदाता को सम्मान की भावना से देखें

■ शिव आमंत्रण

अम्बिकापुर (छग) । ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के नव विश्व भवन, चोपड़ापारा स्थित सेवाकेन्द्र पर राष्ट्रीय किसान दिवस पर यौगिक-जैविक खेती करने वाले किसानों का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित वृक्षमित्र एवं भारत कृषक समाज के अध्यक्ष ओपी अग्रवाल ने कहा कि आज किसान खुदकुशी कर रहे हैं यह बहुत ही दुख का विषय हैं। इसका एकमात्र कारण है समाज में किसानों के प्रति हीनता एवं असमानता की भावना। राजमोहिनी देवी कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता वीके सिंह ने कहा कि यौगिक खेती ही जैविक खेती है। जो किसान शुद्ध विचारों के साथ खेती करते हैं उनकी फसल की उपज बहुत ही अच्छी होती है। यौगिक खेती करने के लिए उन्होंने सभी किसानों को प्रोत्साहित किया। साथ ही ब्रह्माकुमारीज के मुख्यालय माउंट

■ दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते अतिथि।

किसान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में बोले वृक्षमित्र ओपी अग्रवाल

आबू के वायुमंडल की सराहना करते हुए कहा कि जो राजयोग करते हैं उनके चेहरे पर शान्ति और चमक होती है। इससे वह तनावमुक्त बन जाते हैं, जिसका मैंने भी अनुभव किया है। सरगुजा सेवाकेन्द्र संचालिका बीके विद्या ने कहा कि कृषि और ऋषि दोनों का एक ही काम है। ऋषि भगवान को प्राप्त करने के लिए तपस्या करता है और कृषक लोगों को धान्य देने के लिए मेहनत करता है। उनकी मेहनत से ही आज हमारा देश समृद्ध है। हमारी समृद्धि की पांच आधार बातें हैं। उसमें संस्कार, स्वभाव, संबंध, शरीर और सम्पत्ति आती है। प्रत्येक किसान अपने खेत में जाते समय तीन बातों का ध्यान रखेगा तो वो निश्चित समृद्ध बनेगा। पहला - परमात्मा की याद, दूसरा-विचारों की शुद्धता और तीसरा- राजयोग का अभ्यास।

जिला पंचायत उपाध्यक्ष राकेश गुप्ता ने कहा कि किसान भाई यौगिक खेती करने की विधि सीखें और उसे करने की कोशिश करें। वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी आरके कुंअर ने कहा कि यौगिक खेती के माध्यम से हमारा अनाज सात्विक हो जाता है। जब ये सात्विक भोजन करते हैं तो यह हमारे मन को सात्विक एवं बलवान बनाता हैं। इससे हमारी सोच एवं विचार शक्ति की क्वालिटी उत्तम हो जाती है। वरिष्ठ उद्यान विकास अधिकारी डॉ. ज्योत्स्ना मिश्रा ने किसान भाई - बहनों को सरकारी योजनाओं से अवगत कराया। इस दौरान शाश्वत यौगिक खेती करने वाले किसान भाई राजेश्वर पैकरा, नन्दूप्रसाद गुप्ता और रामनरेश गुप्ता का सम्मान किया गया।

पुरी रिट्रीट सेंटर का 19वां स्थापना दिवस मनाया

■ कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते अतिथि।

■ **शिव आमंत्रण । जगन्नाथ पुरी ।** ब्रह्माकुमारीज़ के राजयोग रिट्रीट सेंटर (जीआरसी) के 19 वें स्थापना दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें पुरी के विधायक जयंत कुमार सारंगी, भुवनेश्वर के स्वास्थ्य सेवा निदेशक डॉ. अमरेंद्रनाथ मोहंती, लोकायुक्त सदस्य डॉ. देवव्रत स्वैन, बीके इरशाद ने भाग लिया।

इस दौरान ऑनलाइन माउंट आबू से संस्थान के सचिव बीके निर्वैर, संयुक्त सचिव बीके बृजमोहन, बीके संतोष, बीके रुक्मिणी, बीके करण, पुरी के हरिहरानंद गुरुकुल के उपाध्यक्ष स्वामी समर्पनानंद गिरि, यूके के प्रोफेसर श्रीकांत कुमार सारंगी का संदेश प्रसारित किया गया।

ब्रह्माकुमारी परिवार एक दिन जरूर बनाएगा बेहतर दुनिया

■ निर्वैर भाई के साथ फादर अफोन्सो।

■ शिव आमंत्रण

आबूरोड । जमैका में कैथोलिक पादरी फादर अफोंस जेसू ने माउंट आबू पहुंचकर ब्रह्माकुमारीज़ के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय के सभी परिसरों का भ्रमण कर यहां की गतिविधियों की जानकारी ली। बता दें कि फादर जेसू पिछले 27 साल से मिशनरीज ऑफ द पुअर, डाउनटाउन किंग्स्टन जमैका के मुख्यालय में सेवा दे रहे हैं।

जौका के फादर अफोन्सो पहुंचे माउंट आबू

परिवार के साथ माउंट आबू पहुंचे फादर जेसू ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज में आकर दिव्यता और शांति की अनुभूति हुई। यहां सभी सफेद वस्त्र, सादगी और स्वच्छता देखकर अंतर्मन में दिव्य पवित्रता का एहसास हुआ। उन्होंने कहा कि लंबे समय तक शांति से बैठना मुझे संभव नहीं लगता था, लेकिन यहां आकर सीखा कि कैसे शांत रहें और सभी परिस्थितियों में सकारात्मक रहें।

संस्थान के सचिव राजयोगी बीके निर्वैर भाई और डॉ. बीके निर्मला दीदी से मुलाकात कर उन्होंने प्रसन्नता जाहिर की।

पोषण की पोटली से बताया पोषण का महत्व

■ **शिव आमंत्रण । कोडाइकनाल ।** तमिलनाडु के कोडाइकनाल में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के एजुकेशन विंग (आरईआरएफ) और मदर टेरेसा विमेंस यूनिवर्सिटी के बीच 25 जनवरी को एक एमओयू साइन किया गया। इसके तहत अब मदर टेरेसा विमेंस यूनिवर्सिटी में नैतिक, मूल्यनिष्ठ और आध्यात्मिकता की शिक्षा अब पाठ्यक्रम के रूप में विद्यार्थियों के लिए पढ़ाई जाएगी। इस मौके पर ब्रह्माकुमारीज़ के एजुकेशन विंग के अध्यक्ष डॉ. बीके मृत्युंजय, वीईपी द्वारा निदेशक डॉ. बीके पंडियामणि और मदर टेरेसा महिला विश्वविद्यालय की कुलपति डॉ. वैदेही विजया कुमार के बीच एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए। इस दौरान बीके राधिका, वरिष्ठ राजयोग शिक्षक, कोडाइकनाल भी मौजूद रहे।

अब बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय में भी विद्यार्थी पढ़ सकेंगे नैतिक और मूल्य शिक्षा

■ बीके मृत्युंजय व बीकानेर तकनीकी विवि के कुलपति एमओयू साइन करते हुए।

■ **शिव आमंत्रण । आबूरोड ।** ब्रह्माकुमारीज संस्थान के एजुकेशन विंग (आरईआरएफ) और बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय (बीटीयू), बीकानेर के बीच 1 फरवरी 2021 को एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। संस्थान के आबू रोड स्थित शांतिवन के डायमंड हॉल में बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एचडी चरण और एजुकेशन विंग के अध्यक्ष डॉ. बीके मृत्युंजय ने मूल्यनिष्ठ शिक्षा को लेकर एमओयू साइन किया। इस दौरान प्रो. चरण की पत्नी भी मौजूद रहीं। उन्होंने ब्रह्माकुमारियों की सेवाओं की सराहना की। कुलपति चरण ने बताया कि अब बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय में भी आध्यात्मिकता और नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ के सहयोग से पाठ्यक्रम शुरू किया जाएगा। इस मौके पर जयपुर सबजोन की निदेशिका बीके सुषमा व बड़ी संख्या में बीके भाई-बहनें मौजूद रहे।

सम्मान समारोह » कोरोना वारियर्स का भी किया गया सम्मान

मैसूर सेवाकेंद्र पर नामचीन हस्तियों का किया सम्मान

■ शिव आमंत्रण

मैसूर । मैसूर सेवाकेंद्र पर कोरोना वारियर्स का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। मैसूर सबजोन की मुख्य समन्वयक बीके लक्ष्मी ने सभी का ईश्वरीय सौगात और शॉल-श्रीफल से सम्मान किया। इस दौरान कलेक्टर रोहिणी सिंधुरी, विधायक ए. नागेंद, शहरी विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष एचवी राजीव, रुष्ट के कमिश्नर डॉ. ननेश, सचिव सविता, जीएसएस ग्रुप ऑफ कंपनीज के अध्यक्ष श्री. श्रीहरी,

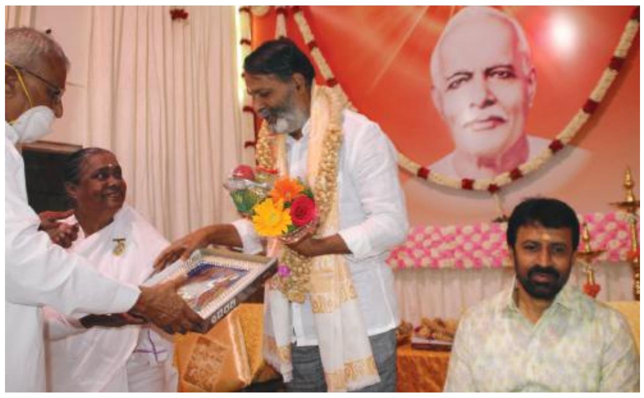

■ जीएसएस ग्रुप ऑफ कंपनीज के अध्यक्ष श्री. श्रीहरी ईश्वरीय सौगात स्वीकारते हुए।

सिटी कॉर्पोरेशन के संयुक्त निदेशक श्री. जयसिम्हा, हड्डी रोग सर्जन और मानसा अस्पताल के अध्यक्ष डॉ. मंजूनाथ, जेएसएस मेडिकल कॉलेज की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. शिल्पा, डेंटल सर्जन डॉ. नंदलाल, अपोलो अस्पताल के सलाहकार चिकित्सक डॉ. रवि पुराणिक, अधिवक्ता संघ के उपाध्यक्ष श्री. प्रभु, मंडल रेल प्रबंधक पूजा, परमहंस योग थैरेपी सेंटर के संस्थापक अध्यक्ष आरए सीताराम, लेखक और संगीतकार डॉ. गीता सीताराम ने प्रमुख रूप से भाग लिया।

यौगिक खेती अपनाने की जरूरत

■ शिव आमंत्रण

गाडरवारा (मप्र)। ब्रह्माकुमारी के ग्राम विकास प्रभाग की ओर से साईंखेड़ा सेवाकेंद्र द्वारा राष्ट्रीय किसान दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बीके उर्मिला ने कहा कि अन्नदाता ठंडी, बरसात या भीषण गर्मी में भी अपना काम पूरी ईमानदारी से करता है। वर्ष में सिर्फ एक दिन राष्ट्रीय किसान दिवस पर किसान का सम्मान करने के बजाए हम सभी हर समय क्यों न किसान को सम्मान दें। आज किसानों को यौगिक खेती अपनाने की जरूरत है। साइंखेड़ा सेवाकेंद्र प्रभारी बीके वंदना ने कहा कि परमात्मा जैसे एक दाता है वैसे दूसरा दाता अन्नदाता किसान है, लेकिन किसान आज आर्थिक तंगी से जूझ रहा है। रासायनिक खेती के बजाए अगर किसान प्राचीन पद्धति से शाश्वत यौगिक खेती करें तो कम लागत में अधिक उपज और पौष्टिक अन्न पैदा कर सकता है। किसान समृद्ध होगा तभी हमारा देश समृद्ध होगा। भारतीय किसान संघ के जिलामंत्री राकेश खेमरिया ने उत्तम खेती, मध्यम व्यापार और कनिष्ट नौकरी विषय पर प्रकाश डाला। इस दौरान कृषि समिति जनपद पंचायत अध्यक्ष मनोज कुमार दुबे, कीरत सिंह पटेल, राजेन्द्र शर्मा, हेमलता शर्मा, मनोज राय, बीके शिवदयाल ने भी यौगिक जैविक खेती के अपने -अपने अनुभव सांझा किए। संचालन बीके पुरुषोत्तम ने किया। समापन पर सभी किसानों का सम्मान किया गया।

किसान सम्मेलन का दीप प्रज्ज्वलन कर उद्घाटन करते अतिथि।

गाडरवारा में किसान दिवस पर किसान सम्मेलन का आयोजन

किसान देश की शान, त्याग-तपस्या का दूसरा नाम

दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते अतिथि।

■ शिव आमंत्रण

नरसिंहपुर (मप्र)। राष्ट्रीय किसान दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें ग्राम विकास प्रभाग के मुख्यालय संयोजक बीके सुमंत ने ऑनलाइन संबोधित करते हुए प्रभाग द्वारा किसानों की उन्नति के लिए चलाए जा रहे शाश्वत यौगिक खेती अभियान के बारे में बताते हुए कहा कि किसान देश की शान हैं और त्याग-तपस्या का दूसरा नाम हैं। यदि भारत को उन्नतशील और सबल राष्ट्र बनाना है तो किसानों को समृद्ध और आत्मनिर्भर बनाना होगा। राष्ट्र को आगे बढ़ाने के लिए हर एक नागरिक में किसानों के प्रति आभार की भावना होनी चाहिए। किसानों को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश से ग्राम विकास प्रभाग द्वारा किसानों को जैविक खेती के लिए प्रेरित किया जाता है। साथ ही निःशुल्क ट्रेनिंग भी दी जाती है। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके कुसुम ने कहा कि भारत की परंपरा आदिकाल से ऋषि और कृषि दोनों से चली आ रही है। इस दौरान वैज्ञानिक केबी सहारे, विषय वस्तु विशेषज्ञ आशुतोष शर्मा, वरिष्ठ कृषि विस्तार अधिकारी बीडी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। बीके प्रीति ने राजयोग के लाभ बताए। किसानों का बीके कुसुम ने सम्मान किया। आभार बीके मुकेश ने माना।

किसानों ने लिया यौगिक-जैविक खेती करने का संकल्प

■ शिव आमंत्रण। **हजारीबाग (झारखंड)**। हजारीबाग सेवाकेंद्र के विष्णुगढ़ शाखा द्वारा राष्ट्रीय किसान दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें बीके तृप्ति ने किसानों को शाश्वत यौगिक खेती की प्रेरणा दी और रासायनिक खाद के उपयोग से हो रहे दुष्परिणामों से अवगत कराया।

इस दौरान किसानों ने संकल्प लिया कि हम अपने भूमि के कुछ हिस्सों में शाश्वत यौगिक खेती एवं जैविक खेती जरूर अपनाएंगे। सभी को ऋषि कृषि पद्धति से अवगत कराया गया और इस पद्धति से खेती करने के लिए प्रेरणा दी गई। साथ ही जन जागरूकता के लिए शोभायात्रा भी निकाली गई। झारखंड मुक्ति मोर्चा के जिला अध्यक्ष शंभूलाल यादव ने कहा कि इस तरह के कार्यक्रम अगर होते रहे तो वह दिन दूर नहीं जब हर गांव गोकुल गांव होगा। संचालन सेवाकेंद्र संचालिका बीके हर्षा ने किया।

किसान भाईयों को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए बीके तृप्ति।

ब्रह्माकुमारीज़ ने किसान मेले में लगाई प्रदर्शनी

■ शिव आमंत्रण। **कासगंज (उप्र)**। उप्र सरकार द्वारा लगाए गए किसान मेले में किसानों के लिए संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें ब्रह्माकुमारीज के ग्राम विकास प्रभाग की प्रदेश संयोजिका और कासगंज सेवाकेंद्र प्रभारी बीके सरोज ने ब्रह्माकुमारीज द्वारा चलाए जा रहे शाश्वत यौगिक खेती अभियान की जानकारी दी। साथ ही संस्थान में किसान प्रदर्शनी लगाई गई। इसमें किसानों को नशा-धूम्रपान छोड़ने और सद्‌गुण के साथ यौगिक खेती अपनाने की सलाह दी। इस दौरान अलीगढ़ मंडल के आयुक्त गौरी शंकर प्रियदर्शी, कासगंज जिलाधिकारी चंद्रप्रकाश सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट की।

अलीगढ़ मंडल के आयुक्त गौरीशंकर प्रियदर्शी को ईश्वरीय सौगात भेंट करती बीके सरोज।

भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए किसानों को सशक्त बनाना होगा

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बीके भावना।

■ शिव आमंत्रण। **सादाबाद (उप्र)**। ब्रह्माकुमारीज के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के तहत किसान दिवस पर स्थानीय सादाबाद सेवाकेंद्र पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें विधायक विजेंद्र सिंह ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह ने किसानों के जीवन और स्थितियों को बेहतर बनाने के लिए कई नीतियां बनाकर अपना बहुमूल्य योगदान दिया है, इसलिए पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह के सम्मान में उनकी जयंती पर किसान दिवस मनाया जा रहा है। सेवाकेंद्र प्रभारी और ग्राम विकास प्रभाग की जोनल को-ऑर्डिनेटर बीके भावना ने कहा कि न्यूटन के तीसरे नियम के अनुसार प्रत्येक क्रिया की एक समान और विपरीत प्रतिक्रिया होती है। अगर हम सम्मान देंगे, तो हमें सम्मान मिलेगा। उसी तरह यदि हम धरती मां को जहरीले रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक देते हैं, तो इसकी उपज मानव शरीर के लिए भी जहर साबित होगी।

धौलपुर के बीके सत्यप्रकाश ने कहा कि अन्नदाता किसान की आप खाना खाते वक्त भलाई के लिए हृदय से प्रार्थना करें। सामाजिक कार्यकर्ता जगवेंद्र सिंह ने कहा कि किसान भारत की आत्मा हैं। खेती किसान की शक्ति और प्रार्थना है। बीके भावना ने किसानों को शॉल भेंटकर सम्मानित किया।

खाद्यान्न मात्रा के बजाय गुणवत्ता पर ध्यान देने की आवश्यकता: डॉ. कौशिक

जैविक खेती करने वाले किसानों का सम्मान कृषि विशेषज्ञ डॉ. कौशिक, कृषि अधिकारी यादव व बीके वसुधा ने किया।

■ शिव आमंत्रण। **कादमा (हरियाणा)**। राष्ट्रीय किसान दिवस के उपलक्ष्य में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय कादमा - झोझूकलां केंद्र के तत्वावधान में रामबास स्थित सेवाकेंद्र में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें कृषि विशेषज्ञ डॉ. राजेंद्र कौशिक ने कहा कि 70 के दशक में खाद्यान्न की कमी के चलते हरित क्रांति का आगाज हुआ। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके वसुधा ने माउंट आबू स्थित तपोवन में शाश्वत जैविक खेती के चमत्कारिक प्रयोग और परिणामों बताते हुए कहा कि वहां ब्रह्माकुमार भाइयों के आध्यात्मिक संकल्प की बदौलत संतरा, चीकू, अनार के बाग बड़ी मात्रा में फल-फूल रहे हैं। करियर काउंसलर आरसी पुनिया ने कहा कि आपकी जागरूकता और सक्रियता के बल पर गांव खेती और स्वरोजगार में आत्मनिर्भर होकर ग्राम स्वराज का लक्ष्य हासिल कर सकता है। इस दौरान जैविक खेती में अग्रणी काम कर रहे किसान धर्मेंद्र व भूपेंद्र रामबास, रविंद्र बड़राई, हेमंत बिजना, ईश्वर कान्हड़ा तथा सतपाल तिवाला को स्मृति चिन्ह व शाल भेंट करके सम्मानित किया गया। कृषि विशेषज्ञ नित्यानंद यादव, ग्रामीण विकास परिषद अध्यक्ष राजेंद्र यादव, कृपानाथ किसान क्लब के अध्यक्ष विनोद कुमार, ग्रामीण विकास मंडल महिला प्रेरक सविता सोनी ने भी संबोधित किया।

पुष्पांजलि ब्रह्मा बाबा की 52वीं पुण्यतिथि पर दुनियाभर के लोग ऑनलाइन जुड़े

ब्रह्मा बाबा समान बनने का लिया संकल्प

शिव आमंत्रण

आबू रोड । प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा की 52वीं पुण्यतिथि 18 जनवरी को विश्व शांति दिवस के रूप में मनाई गई। दुनियाभर से लाखों लोगों ने ऑनलाइन कार्यक्रम में जुड़कर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

ऑनलाईन कार्यक्रम में संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कहा कि बाबा ने आध्यात्म के जरिए मानव की तमाम समस्याओं के समाधान के तरीके बताए। यदि मनुष्य सही रूप में आध्यात्मिकता द्वारा आंतरिक विकास कर ले तो उसकी समस्त समस्याएं समाप्त हो जाएंगी। बाबा के बताए मार्ग पर आज लाखों लोग चल रहे हैं।

ब्रह्मा बाबा की स्मृति में माउंट आबू स्थित पांडव भवन में बने शांति स्तंभ का फूलों से विशेष शृंगार किया गया।

बाबा के समाधिस्थल शांति स्तंभ का विशेष फूलों से किया शृंगार

बाबा ने जो आध्यात्म की लौ जगाई थी, वह आज मशाल की तरह पूरी दुनिया को रोशन कर रही है। संस्थान के महासचिव बीके निर्वैर ने लोगों से आह्वान किया कि इस मौके पर संकल्प लें कि इस हम अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने का प्रयास करेंगे। क्योंकि मनुष्य को महान बनाने का दूसरा कोई रास्ता नहीं है। जब मनुष्य के जीवन में मानवीय मूल्य हो तो ही वह महान बनता है। अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन ने कहा कि बाबा ने हम बच्चों को हर एक दिव्य गुण कर्म के माध्यम से सिखाया। उनके श्रेष्ठ कदमों के कारण ही आज हम यहां अपने जीवन को श्रेष्ठ और महान बनाने के बारे में सोच पा रहे हैं। बाबा के जीवन के प्रत्येक कदम प्रेरणादायी थे। कार्यक्रम प्रबन्धिका बीके मुन्नी, कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय ने भी अपने विचार व्यक्त किए। पुण्यतिथि को लेकर संस्थान के देश सहित विश्वभर में स्थित सेवाकेंद्र पर पूरे जनवरी माह विशेष योग-तपस्या के कार्यक्रम चले।

पूर्व शिक्षामंत्री ने किया शांतिवन का अवलोकन

शिव आमंत्रण । आबूरोड। राजस्थान सरकार के पूर्व शिक्षामंत्री और अजमेर के विधायक वासुदेव देवनानी, आबू रोड नगरपालिका चुनाव के सहप्रभारी मनोहर सिंह, सिरोही जिलाध्यक्ष नारायण पुरोहित समेत कई भाजपा के वरिष्ठ नेताओं ने शांतिवन का अवलोकन किया और संस्था की गतिविधियों की जानकारी ली। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज संस्थान के मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष बीके करुणा, कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय ने ज्ञान चर्चा के बाद शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। इस दौरान नवनिर्वाचित नगरपालिका उपाध्यक्ष रवि शर्मा, यूआईटी के पूर्व अध्यक्ष सुरेश कोठारी, पीस न्यूज के संपादक बीके कोमल सहित कई लोग उपस्थित थे।

दादी जानकी की स्मृति में बन रहा शक्ति स्तंभ

दादी की स्मृति में निर्माणाधीन शक्ति स्तंभ का प्रारूप।

शिव आमंत्रण । आबूरोड । ब्रह्माकुमारीज संस्था के शांतिवन में संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी की स्मृति में शक्ति स्तम्भ का निर्माण किया जाएगा। इसका कार्य प्रगति पर जो मार्च के अंतिम सप्ताह में पूर्ण हो जाएगा। करीब 625 वर्ग मीटर में बनने वाले इस शक्ति स्तम्भ में दादीजी के जीवन का संदेश भी अंकित होगा। सम्मेलन सभागार के मैदान में बनने वाला यह शक्ति स्तम्भ योग साधना के लिए विशेष तौर पर उपलब्ध रहेगा। दादी जानकी की निजी सचिव रहीं बीके हंसा ने कहा कि दादीजी का जीवन योग, त्याग और तपस्या से परिपूर्ण था। इसलिए यह शक्ति स्तम्भ हमेशा उनके किए गए समाजोत्थान तथा विशेषकर महिलाओं के उत्थान के लिए याद किया जाएगा।

दस साल से दिलों में दस्तक दे रहा रेडियो मधुबन

रेडियो मधुबन के ऑनलाइन कार्यक्रम में प्रस्तुति देते कलाकार।

शिव आमंत्रण । आबू रोड। जिले का पहला कम्युनिटी रेडियो स्टेशन रेडियो मधुबन 90.4 दस साल का हो गया। इन दस वर्षों में रेडियो मधुबन ने हजारों लोगों को नई जिन्दगी, नया जोश और मानवीय मूल्यों को जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित किया। रेडियो मधुबन की दसवीं सालगिरह ऑनलाइन मनाई गई। आबू के छोटे-छोटे गांव तक अपनी सेवाएं पहुंचाकर रेडियो मधुबन ने कई लोगों की जिंदगी बदली है।

इस ऑनलाइन सालगिरह में ज्ञानामृत के प्रधान संपादक बीके आत्म प्रकाश ने ने कहा कि आने वाले समय में यह अपने बेहतरीन संदेशों से हजारों लाखों लोगों को जिन्दगी बदलेगा। आज हर छोटे छोटे से गांव के बच्चे भी रेडियो मधुबन के कायल हैं। रेडियो मधुबन के स्टेशन हेड यशवंत पाटिल ने पूरी टीम के साथ अपने सभी श्रोताओं का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि जब रेडियो मधुबन की शुरुआत हुई तब यह यकीन नहीं था कि हम इसे चला पाएंगे। परन्तु रेडियो रेडियो मधुबन की टीम ने असंभव को संभव कर दिखाया। हर प्रकार के कार्यक्रम परोसकर लोगों को रेडियो मधुबन सुनने पर मजबूर कर दिया है। प्रोडक्शन हेड कृष्णा भाई ने रेडियो मधुबन के सफर के बारे में जानकारी दी। इस दौरान बच्चों ने महिलाओं के अधिकारों को ध्यान में रखते हुए एक नाटक पेश किया। किसी ने डांस किया तो किसी ने अपने गीत से सबका दिल मोह लिया। कार्यक्रम में कमलवाणी सामुदायिक रेडियो स्टेशन हेड दी.पी सिंह जी, रेडियो शारदा, जम्मू के स्टेशन हेड रमेश हंगलू जी, वागड़ रेडियो के स्टेशन हेड रणजीत ने भी भाग लिया। समापन पर रेडियो मधुबन के टेक्निकल हेड रोहित ने हम होंगे कामयाब गीत के साथ सभी का आभार व्यक्त किया।

द्वारिका से ईटानगर की यात्रा पर निकला दल पहुंचा शांतिवन

साइकिल यात्रियों का दल शांतिवन पहुंचने पर ब्रह्माकुमारीज की ओर से स्वागत किया गया।

शिव आमंत्रण। आबू रोड। क्लीन इंडिया, ग्रीन इंडिया के संदेश को लेकर साइकिल यात्रा पर निकला युवाओं का दल शनिवार को ब्रह्माकुमारीज संस्थान के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय शांतिवन पहुंचा। दल के सदस्यों ने शांतिवन परिसर का भ्रमण कर यहां की गतिविधियों की जानकारी लेते हुए आध्यात्म पर चर्चा की। इस दौरान साइकिल दल का ब्रह्माकुमारीज के वरिष्ठ भाईयों ने स्वागत कर उन्हें अपने मिशन में सफलता प्राप्त करने की शुभकामनाएं दीं।

साइकिल दल में शामिल सबसे बुजुर्ग यात्री 62 वर्षीय रवींद्र तराटे ने बताया कि मन में जब कुछ करने का जुनून और जज्बा हो तो किसी भी काम के लिए उम्र मायने नहीं रखती है। यात्रा गुजरात के द्वारिका से शुरू हुई है जो अरुणाचल प्रदेश के ईटानगर में 3900 किमी का सफर तय कर पूरी होगी। हम लोग रोजाना 50-70 किमी साइकिलिंग करते हैं। उन्होंने कहा कि शांतिवन में अद्भुत शांति का अनुभव हुआ। साथ ही यहां की आध्यात्मिक ऊर्जा अविस्मरणीय है। ब्रह्माकुमारीज संस्थान द्वारा पर्यावरण संरक्षण के लिए समय-समय पर रैली, अभियान चलाए जाते हैं जो बहुत की प्रेरणादायी है। यात्रा दल में विजय पासकर, नामदेव राउत, श्रीकांत उइके और संदीप वैद्य शामिल हैं। इस दौरान ब्रह्माकुमारी की ओर से बीके रामसुख मिश्रा, बीके मोहन भाई, बीके श्रीनिवास भाई, बीके अमरदीप भाई, बीके धीरज भाई, बीके धीरज भाई, इंजी. बीके रमेश भाई सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे।

स्वास्थ्य परीक्षण शिविर ब्रह्माकुमारीज के मनमोहिनीवन के हेल्थ केयर सेंटर में आयोजन

श्रमिकों का जांचा स्वास्थ्य, नशामुक्ति का किया आह्वान

शिव आमंत्रण

आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के मनमोहिनीवन स्थित हेल्थ केयर सेंटर में गुरुवार को मेडिकल विंग की ओर से स्वास्थ्य परीक्षण शिविर आयोजित किया गया। इस दौरान कोरोना की गाइड लाइन सहित फिजिकल डिस्टेंस के नियमों का पालन किया गया।

शिविर में मेडिकल विंग के सचिव डॉ. बनारसीलाल शाह, डॉ. मेघना और डॉ. तृप्ति ने श्रमिकों का स्वास्थ्य परीक्षण करते हुए बताया कि आज फल, सब्जी और अनाज सभी रासायनिक केमिकल, खाद और पेस्टीसाइड के माध्यम से उगाए जा रहे हैं। इससे हम जो भी खाद्य पदार्थ खाते हैं उनके साथ हमारे अंदर केमिकल भी चले जाते हैं जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। आज लोगों को सामने सबसे बड़ी चुनौती खुद को स्वस्थ रखना हैं। बता दें कि मनमोहिनी वन के हेल्थ केयर सेंटर द्वारा समय-समय पर आमजन और गरीब वर्ग के लोगों के लिए नि:शुल्क स्वास्थ्य परीक्षण, नशामुक्ति शिविर आयोजित किए जाते हैं।

200 से अधिक श्रमिक पुरुष-महिलाओं का किया चेकअप

नशामुक्ति के लिए किया प्रेरित....

बीके अचला बहन, बीके शुभांगी बहन, बीके शिल्पा बहन, बीके मनीषा बहन ने शिविर में आए लोगों को नशे के दुष्परिणाम बताते हुए नशामुक्त जीवन के लिए प्रेरित किया। श्रमिकों को बताया कि आमतौर पर लोग एक दिन में गुटखा-तंबाकू-पान मसाले में 50 रुपये तक खर्च कर देते हैं, जबकि ये सभी चीजें स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। यदि इस पैसे की बचत कर हम फल-सब्जी में खर्च करते हैं तो हमारा स्वास्थ्य हमेशा अच्छा बना रहेगा। साथ ही बचत भी होगी। किसी भी तरह का नशा शारीरिक और मानसिक तौर पर हानिकारक ही होता है। साथ ही सभी को संकल्प दिलाया कि जीवन में हमेशा नशे से दूर रहेंगे। इस दौरान मेडिकल विंग के मेहताफ भाई, अविनाश भाई, शुभाष भाई सहित मीडिया विंग से बीके कृष्णा बहन, बीके अमरदीप भाई, हरीश भाई, दलजीत भाई भी मौजूद रहे।

पुष्पांजलि बीके ओमप्रकाश भाई की पुण्यतिथि पर ऑनलाइन वेबीनार का आयोजन

मूल्यों के बिना मीडिया का उद्देश्य अधूरा

भ्राता बलदेव भाई शर्मा जी, कुलपति, कुशाभाउ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार वि.वि. रायपुर | भ्राता एन.के. सिंह जी, वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक नई दिल्ली | भ्राता हिमांशु द्विवेदी जी, प्रधान सम्पादक, हरिभूमि, रायपुर | भ्राता शिव दुबे जी, सम्पादक, दैनिक भास्कर, रायपुर | भ्राता राजेश लाहोटी जी, राज्य सम्पादक, पत्रिका, रायपुर | ब्रह्माकुमार आत्मप्रकाश जी, उपाध्यक्ष, मीडिया विंग, माउण्ट आबू | भ्राता कमल दीक्षित जी, सम्पादक, राजी खुशी माउण्ट आबू | श्रद्धेय ब्रह्माकुमारी कमला दीदी, क्षेत्रीय निदेशिका, इन्दौर जोन रायपुर

■ शिव आमंत्रण

रायपुर (छग) । प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मीडिया प्रभाग द्वारा मीडिया प्रभाग के पूर्व अध्यक्ष बीके ओमप्रकाश भाईजी की पांचवी पुण्य तिथि पर वेबीनार का आयोजन किया गया। मीडिया, समाज और मूल्य विषय पर आयोजित इस वेबीनार में कुशाभाउ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव शर्मा ने कहा कि मूल्यों के बिना मीडिया का उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता। अखबार से लाभ कमाएं परन्तु मीडिया के मूल्यों की कीमत पर नहीं। मीडियाकर्मी तो ऋषि परंपरा का वंशज है। जग को सुखी बनाना, दु:खी व्यक्ति के चेहरे पर मुस्कान लाना यह पत्रकार का काम होना चाहिए। अन्यथा मीडिया लोकोपकार, जन जागरण और सत्यान्वेषण का माध्यम नहीं रह पाएगा।

नई दिल्ली के वरिष्ठ पत्रकार एनके सिंह ने कहा कि माता-पिता और शिक्षकों को वैल्यु एजुकेशन देने का कार्य ब्रह्माकुमारी संस्थान अच्छे से कर सकता है। नैतिक मूल्यों की शिक्षा को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल करना चाहिए।

कुशाभाऊ ठाकरे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव शर्मा के विचार

हरिभूमि के प्रधान संपादक हिमांशु द्विवेदी ने कहा कि वर्तमान सूचना क्रांति के दौर में हममें से हर दूसरा या तीसरा आदमी पत्रकार बना हुआ है और सोशल मीडिया द्वारा सूचनाओं का प्रसार कर रहा है। किन्तु इसके साथ विश्वसनीयता का संकट पैदा हो गया है। यह बहुत बड़ी चुनौती है।

दैनिक भास्कर के राज्य संपादक शिव दुबे ने कहा कि मीडिया, समाज और मूल्य तीनों एक दूसरे के पूरक हैं। हमारा समाज मूल्यों से बनता है। यह सोचने का विषय है कि मीडिया में मूल्यों की कमी क्यों हो रही है? सोशल मीडिया की खबरों पर रोक लगाने की जरूरत है।

पत्रिका के राज्य संपादक राजेश लाहोटी ने कहा कि मीडिया ही इस देश का ऐसा स्तम्भ रहा है जिसने समाज को जागरूक करने में अपनी पूरी जिम्मेदारी निभाई है। महामारी के समय भी इसने लोगों को जागरूक किया है। माउण्ट आबू से प्रकाशित ज्ञानामृत के संपादक बीके आत्मप्रकाश ने कहा कि कर्म का सिद्धांत है कि जैसा कर्म करेंगे वैसा फल मिलेगा।

माखन लाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विवि के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. कमल दीक्षित ने कहा कि समाज इस समय मूल्यहीन है यह कहना गलत नहीं होगा। मीडिया भी अब समाज सरोकारी नहीं रह गया है। मीडिया सत्ता, समर्थ और बाजार केन्द्रित हो गया है। इसका कारण यह है कि मीडिया अब व्यवसाय बन गया है। क्षेत्रीय निदेशिका बीके कमला ने सभी मीडियाकर्मियों का स्वागत करते हुए कहा कि मीडिया समाज का दर्पण है। मानवीय मूल्यों के बिना जीवन में सुख और शान्ति संभव नहीं है। आध्यात्मिकता से ही जीवन में मानवीय मूल्यों का संचार होगा। बीच में योग आयोग की पूर्व सदस्य बीके मंजू ने राजयोग मेडीटेशन का अभ्यास कराया। संचालन बीके अदिती ने किया।

प्रतिदिन स्वयं का ध्यान रखने कुछ वक्त निकालें

■ **शिव आमंत्रण** । **आबूरोड** । ब्रह्माकुमारीज संस्थान के मेडिकल प्रभाग और मुख्यालय से संचालित रेडियो मधुबन 90.4 एफएम द्वारा लोगों के मानसिक सशक्तिकरण के लिए कॉल ऑफ टाइम विषय पर ऑनलाइन टॉक का आयोजन किया। मेडिकल प्रभाग के सह सचिव डॉ. सचिन परब ने सभी हेल्थ प्रोफेशनल्स को प्रतिदिन अपना स्वयं का ध्यान रखने के लिए कुछ वक्त निकालने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि डॉक्टर या हेल्थ केअर प्रेक्टिशनर्स मेडिटेशन सीखें, राजयोग मेडिटेशन के अभ्यास के लिए घर बार छोड़ने की जरूरत नहीं है। कुछ भी छोड़ने की जरूरत नहीं है। आपको खुद को एक चैतन्य शक्ति आत्मा समझकर परमात्मा को याद करना है। यूपी के समाजसेवी अरविंद सांगल ने कहा कि युवा अपनी आजादी को सशक्तिकरण मानने लगते हैं, लेकिन ये आजादी सिर्फ एक से संबंधित नहीं है। सामाजिक सशक्तिकरण इन सबसे ऊपर उठकर पूर्ण समाज को एक स्तर पर लाना है और विश्वपटल पर मानवमात्र की सामाजिकता को सशक्त बनाना है। डॉ. मेघना ने कहा कि बाहर क्या चल रहा है, कितनी नकारात्मक स्थिति है, कितनी एनर्जी ड्रेन करने वाली परिस्थिति है, पर उस परिस्थिति से कनेक्ट ना होके हमें अपने आपसे कनेक्ट होना, जिसे हम सोल कॉन्शस (आत्माभिमानी स्थिति) कहते हैं। प्रभाग के कार्यकारी सदस्य बीके अविनाश, यूपी के समाजसेवी अरविंद सांगल, मुख्यालय से डॉ. बीके मेघना मुख्य वक्ता के रूप में शामिल हुए। संचालन आरजे बीके रमेश ने किया।

मेडिकल विंग के ऑनलाइन टॉक में में वक्ताओं ने रखे अपने विचार

ओमप्रकाश भाईजी की पुण्यतिथि पर 40 यूनिट ब्लड डोनेट

■ **शिव आमंत्रण** । **इंदौर** । ओमशांति भवन के ज्ञान शिखर स्थित ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश भाई सभागृह में उनकी पांचवी पुण्यतिथि पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इसमें 40 यूनिट ब्लड डोनेट किया गया। कार्यक्रम में एमजीएम मेडिकल कॉलेज के डीन डॉ. संजय दीक्षित, इंदौर जोन की मुख्य क्षेत्रीय समन्वयक बीके हेमलता, डायग्नोस्टिक सेंटर की डायरेक्टर डॉ. साधना सोड़ानी, आईएमए के अध्यक्ष डॉ. सतीश जोशी, एमवाय हॉस्पिटल ब्लड बैंक के मैनेजर डॉ. अशोक यादव एवं विनायक नेत्रालय के वरिष्ठ नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. अमित सोलंकी ने रक्तदान के फायदे बताते हुए लोगों को आगे आने की प्रेरणा दी।

मस्तिष्क संबंधी बीमारियों के इलाज की सुविधा अब आबू रोड में

■ **शिव आमंत्रण** । **आबू रोड** । ब्रह्माकुमारीज संस्थान के आबू रोड स्थित ग्लोबल हॉस्पिटल ट्रॉमा सेन्टर में अब न्यूरोसर्जन की सेवाएं प्रारंभ हो गई हैं। ग्लोबल हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. प्रताप मिड्ढा ने बताया कि अब किसी को सिर में चोट लग जाए या इससे संबंधित कोई इलाज हो तो उसके लिए दूर नहीं जाना पड़ेगा। अब हॉस्पिटल में न्यूरो विशेषज्ञ डॉ. अर्पित अग्रवाल नियमित रूप से सेवाएं देंगे। आबू रोड और आसपास का आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र है। ऐसे में लोगों को समय पर उपचार मिलने से उनकी जान बच जाएगी।

इस दौरान अस्पताल की उपनिदेशक डॉ. रोजा तुम्मा, सहायक प्रबंधक विशाल, ब्लड बैंक अधिकारी धर्मेन्द्र सिंह, ग्लोबल आई केयर के मैनेजर दिनेश सिंह सहित कई लोग उपस्थित थे।

विजय दिवस: सेनानियों का किया सम्मान

सम्मानित कैप्टन एहसास सिंह के साथ ईश्वरीय परिवार।

■ **शिव आमंत्रण** । **हाथरस** । यूपी हाथरस के आनंदपुरी कॉलोनी में विजय दिवस के उपलक्ष्य में पूर्व सैनिक एवं स्थानीय सेवाकेन्द्र के ट्रस्टी बीके कैप्टन अहसान सिंह का सम्मान किया गया। इस अवसर पर मौजूद विंग कमांडर एवं जिला सैनिक कल्याण अधिकारी प्रमोद कुमार, कैप्टन राजेन्द्र सिंह, सूबेदार मेजर रामवीर सिंह, रनवीर सिंह यादव सहित कई पूर्व सैनिक अधिकारियों द्वारा कैप्टन अहसान सिंह को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। आपको बता दें बीके कैप्टन अहसान सिंह 1962 में भारत-चीन युद्ध, 1965 और 1971 में भारत-पाकिस्तान जंग में शामिल थे।

युवा प्रभाग वैश्विक शांति में युवा वर्ग का योगदान विषय पर सेमीनार का आयोजन

अहिंसक और शांतिपूर्ण विश्व की स्थापना का लिया संकल्प

■ शिव आमंत्रण

बीना । ब्रह्माकुमारीज संस्थान के युवा प्रभाग द्वारा देशव्यापी अभियान वैश्विक शांति के लिए चलाया जा रहा है। इसके तहत ब्रह्माकुमारीज बीना के ज्ञान शिखर सेवाकेंद्र पर राष्ट्रीय युवा दिवस के उपलक्ष्य में सेमीनार का आयोजन किया गया।

थाना प्रभारी कमल निगवाल ने महिलाओं का सम्मान करने और समाज में कही भी हो रहे अपराध के नियंत्रण के लिए पुलिस को सूचित करने की अपील की। चौकी प्रभारी लखन ने कहा कि पुलिस में कई युवा अपनी ईमानदार, स्पष्ट कार्यशैली के साथ समाजहित में बेहतर कार्य कर रहे हैं। माउंट आबू से पधारे सेना से सेवानिवृत्त नायब सूबेदार नारायण सिंह ने कहा कि परिवर्तन के लिए परमात्मा की नजरें भी युवा पर हैं। आप सभी महान हैं जो युवावस्था में हैं। यह जीवन का सबसे अनमोल और अमूल्य समय है, इसलिए इस ऊर्जा को सकारात्मक कार्यों में लगाएं। एक बार समय निकल गया तो पछतावे के अलावा कुछ हासिल नहीं होता है। एसआई प्रतिभा मिश्रा ने महिलाओं की सुरक्षा को लेकर युवतियों को टिप्स दिए। बीके सरोज दीदी ने कहा कि आभार प्रकट करते युवाओं को समाजहित में कार्य करने और अपना जीवन चरित्रवान व मूल्यवान बनाने का आह्वान किया। समापन पर युवाओं का ब्रह्माकुमारी दीदियों द्वारा सम्मान कर ईश्वरीय उपहार भेंट किया गया। इस दौरान बीके सरस्वती बहन, बीके गायत्री बहन, बीके रुचि बहन, बीके पूनम बहन के साथ युवा भाई-बहनें मौजूद रहे।

सेमीनार में पधारे युवाओं को संकल्प कराते हुए बीके जानकी दीदी, साथ में उपस्थित बीके

युवाओं ने लिया आध्यात्मिकता अपनाने का संकल्प

युवाओं को कराया संकल्प..

बीके जानकी दीदी ने कहा कि देश की जान और शान युवा हैं। युवा ही वह तरुणाई हैं जिसमें समाज का परिवर्तन करने की अदम्य शक्ति और साहस है। युवा अपनी ऊर्जा को देश के विकास, समाजहित और सद्कार्यों में लगाएं। आज सारे जहान की नजरें युवाओं की तरफ हैं। यदि युवा एक लक्ष्य के साथ आध्यात्मिकता को जीवन में धारण कर आगे बढ़ेंगे तो सफलता निश्चित है। युवाओं को संकल्प कराया कि मैं धीरज एवं संयम को अपनाकर स्वयं के मन को स्थिर रखूंगा...मैं परिवार में समायोजन का गुण धारण कर शांति बनाए रखूंगा... मैं समाज के सभी वर्गों के प्रति सद्भावना अपनाते हुए एकता व शांति के प्रयास करूंगा... मैं अहिंसक एवं शांतिपूर्ण विश्व के लिए संकल्पबद्ध हूं।

योग की शक्ति अपने दैनिक जीवन में आने वाली समस्याओं का समाधान जानें वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक बीक

सच्चे योगी के लिए मैं-पन का त्याग जरूरी

पिछले अंक से क्रमश:

समस्या-समाधान

ब्र.कु. सूरज भाई
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक

बाबा यह भी कहा करते कि 'जब इस कलियुगी विकारी सृष्टि का महाविनाश होगा तो ब्रह्मा-वत्स उस पहाड़ी पर ही होंगे तथा वहां से ही विनाश देखेंगे।' अत: मुझे प्रबल प्रेरणा हुई कि हो न हो यह वही पहाड़ी है

■ शिव आमंत्रण

आबू रोड । जिसे सच्चा योगी बनना है उसे मैं-पन के त्याग पर बहुत सूक्ष्मता से ध्यान देना चाहिए। कहां- कहां हमारे अंदर मैं-पन आ जाता है। इससे हम स्वयं को बचाते चलें, बचाना बिल्कुल सहज है। केवल हमें अवेयरनेस हो, जानकारी रहे कि मेरे अंदर मेरापन कहां आ गया। आप सभी ने मुरली में सुना हो कि यदि करनकरावनहार बाप की स्मृति सदा ही रहे कि बाबा करा रहा है तो तुम निरंतर योगी बन जाओ। मैं करता हूं, मेरी जिम्मेदारी है, मैंने ये किया, मुझे ये करना है, ये काम करने हैं.... ये मैं-पन मन को भारी कर देता है। इससे हम योगयुक्त नहीं रह पाते तो जिसे योगयुक्त होना है, उसे निरहंकारी बनना ही पड़ेगा।

योगी का सरलचित्त और सहज भाव होना जरूरी

योगी वो जो सरलचित्त हो, जिन्होंने जीवन को सहज भाव से जीना सीख लिया हो। हम सभी को जीवन प्राप्त है, जीवन जीने का आनंद प्राप्त है। किसी को कदम-कदम पर कांटों पर चलना पड़ रहा है। किसी का जीवन समास्याओं से भरा है और कोई इस जीवन को सुखपूर्वक तय कर रहा है। सब अपने ऊपर है। यह एक कला है। कैसे सहज भाव से इस यात्रा पर आगे बढ़ा जाए। ये यात्रा है और इसमें हमें इसे सहज भाव से जीना है।

सफल योगी होते हैं साक्षी दृष्टा

जिनको महान योगी बनना हो उन्हें साक्षी दृष्टा हो जाना चाहिए। कौन क्या कर रहा है, बिल्कुल सरल शब्दों में हर व्यक्ति जो कुछ कर रहा है। वह तो उसे करना ही है ना। प्रोग्राम है उसे करने का। बिना प्रोग्राम के कोई कुछ नहीं कर रहा है। हम क्या विशेष करते हैं। कोई कहे क्यों करते हैं, यह तो प्रोग्राम था। आप सुनने आ गए, कोई ऐसे ही कहने लगे क्यों सुनने आ गए यहां। हर चीज प्रोग्राम अनुसार चल रही है ना। हर आत्मा को भी तो प्रोग्राम

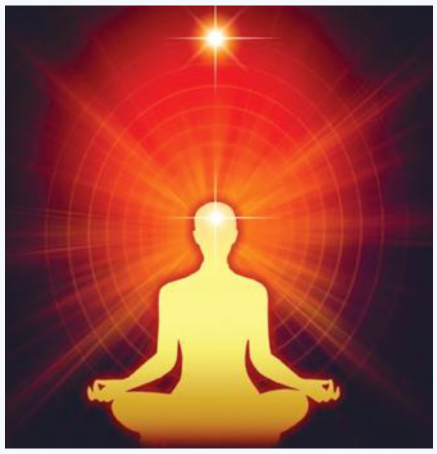

मिला हुआ है। ऐसे सिम्पल लैग्वेंज दे दें इसे जो व्यक्ति दूसरों के बारे में सोच रहा है। उसे अपने बारे में सोचने का तो अवसर ही नहीं मिलता। जो दूसरों को देख रहा है, वह अपने को देखना भूल जाते हैं। जो अपने को ही नहीं देखते तो बाबा भी उन्हें नहीं देखता। जिनकी नजर दूसरों पर है। उन पर बाबा की नजर नहीं पड़ती, इसलिए साक्षीभाव अपनाना।

भगवान हमारा संबंधी हो गया है

जो कुछ इस संसार में हो रहा है और जो कुछ होगा। उसे खेल की तरह देखना। जो कुछ हमें करना है, जो कर्त्तव्य निभाने हैं, जो जिम्मेदारी है उन्हें भी सहज और साक्षीभाव से करना। ये ज्ञानयुक्त आत्मा की पहचान है। इस तरह हम योग के मार्ग में आगे बढ़ते हैं। इस योग के सब्जेक्ट को दो हिस्सों में बांट दें। एक है इमोशनल तरीका अर्थात् भावनात्मक तरीका। संबंधों के रूप में बाबा को याद करना और दूसरा है बुद्धियोग। मन और बुद्धि से योग लगाना। पहला तरीका बिल्कुल सिम्पल है। बाबा ने कहा है कि बच्चे तुमको नशा होना चाहिए कि भगवान तुम्हारा संबंधी बन गया है। कितनी नशे की बात है। भगवान हमारा संबंधी हो गया है। बाबा मेरा है, इसको सच्चे दिल से स्वीकार कर लेना। ये योग की सरल विधि है। जिसको कुछ भी न हो... बाबा मेरा है और ये छोटी बात नहीं है। बाबा पर अधिकार... मेरा है। इस पर हमें चिंतन को आगे बढ़ाना है... बाबा मेरा।

व्यक्तित्व विकास जीवन प्रबंधन के लिए जरूरी है हमारा मन का प्रबंधन

विज्ञान और वैज्ञानिकों ने भी स्वीकारी पुनर्जन्म

स्व-प्रबंधन

बीके ऊषा
स्व-प्रबंधन विशेषज्ञ, माउंट आबू

■ शिव आमंत्रण

आबू रोड । जब डॉक्सी मचान पर पहुंच गई तो वह वहां इधर-उधर घूमने लगी। मानो वह कोई वस्तु खोज रही हो। एडवर्ड डॉक्सी भी पीछे-पीछे मचान पर चढ़ गए। उन्होंने डॉक्सी को उठा लिया और उसे नीचे लेकर आ गए। कुछ समय बाद सब लोग बैठकर चाय पी रहे थे। इस दौरान बुजुर्ग महिला वुडफोर्ड ने कहानी सुनाई कि छह साल पहले उनके पास क्वीनी नामक एक कुतिया थी। उसने कड़ाके की ठंड में दिसंबर 1948 में मचान पर बच्चों को जन्म दिया। यह देखकर पुत्र रॉबर्ट ने क्वीनी को सीढ़ी पर चढ़ना सिखाया था। क्वीनी के बच्चों को जन्म देने के दो दिन बाद रॉबर्ट अपने कॉलेज लौट गया। वुडफोर्ड को अचानक जानकारी मिली कि उनके पति दुर्घटना में घायल हो गए हैं और उन्हें गंभीर हालत में चिकित्सालय में भर्ती किया गया है। इस पर वुडफोर्ड तुरंत चिकित्सालय के लिए चल पड़ी। इस जल्दबाजी और घबराहट में उन्हें

जब डॉक्सी मचान पर पहुंच गई तो वह वहां इधर-उधर घूमने लगी। मानो वह कोई वस्तु खोज रही हो। एडवर्ड डॉक्सी भी पीछे-पीछे मचान पर चढ़ गए। उन्होंने डॉक्सी को उठा लिया और उसे नीचे लेकर आ गए।

ध्यान ही नहीं रहा कि क्वीनी रसोई घर में खाना खा रही है। वुडफोर्ड दो दिन बाद घर लौटी। अपने बच्चों के देखने के लिए क्वीनी का मन कितना व्याकुल हुआ होगा? इसकी केवल कल्पना ही की जा सकती है। वापस लौटने पर जैसे ही वुडफोर्ड ने दरवाजा खोला वैसे ही क्वीनी बाहर भागी और सीढ़ी से चढ़ते हुए मचान पर पहुंची। यह स्थान बर्फ की परत से ढका हुआ था। जैसे ही क्वीनी ने उस पर पैर रखा तो वह फिसल कर एक कुल्हारी पर जा गिरी और उसकी मौत हो गई। संक्षेप में यह डॉक्सी का जीवन वृतांत है।'' इन सभी बातों पर विचार करने पर हम

यह कह सकते हैं कि हो-न-हो क्वीनी ने डॉक्सी के रूप में पुनर्जन्म लिया था, क्योंकि अब उसकी आयु छह वर्षों की थी। यदि ऐसा न होता तो डॉक्सी तेज भागती हुई कार से बाहर क्यों कूदती? फार्म कि ओर क्यों दौड़ती? कटीली बाड़ को क्यों पार करती? और वुडफोर्ड के पास पहुंचकर प्रेम पूर्वक उन्हें क्यों चाटती। उसके बाद सीढ़ी पर चढ़ते हुए मचान की ओर क्यों जाती? माना कि वह अपने नित्य कार्य का पूर्वाभ्यास कर रही थी या पुनरावृति कर रही थी? एक समय था जब विज्ञान या वैज्ञानिक पुनर्जन्म को नहीं मानते थे लेकिन आज विज्ञान और कई वैज्ञानिक भी इस बात की पुष्टि करने लगे हैं कि मनुष्य का पुनर्जन्म मनुष्य योनि में ही होता है। दुनिया में पुनर्जन्म संबंधी अनुसंधान होने लगे हैं। कई वैज्ञानिक सम्मोहन के आधार पर पुनर्जन्म पर रिसर्च करते हैं। उल्लेखनीय बात यह है कि सम्मोहन की अवस्था में प्रतीप-गमन करवाए गए हजारों व्यक्तियों में से किसी एक व्यक्ति ने भी यह नहीं कहा कि अपने पूर्वजन्म में वह कोई पशु या पक्षी था। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि उन व्यक्तियों ने मानव रूप में पुनर्जन्म के ब्यौरे दिए हैं। कई लोगों के जीवन में कई प्रकार के भय होते हैं, जैसे किसी को पानी का डर होता या ऊंचाई, अंधेरा या किसी हथियार आदि से डर होता या कोई मानसिक परेशानी का अनुभव करते हैं। डॉक्टर सम्मोहन के आधार पर उस व्यक्ति को पूर्वजन्म में ले जाकर उसकी चेतना के अंदर की सतह से उस डर का कारण ढूंढते हैं और उसे उस डर से मुक्त करने का प्रयास करते हैं।

चिंतन आध्यात्म में गहराई के लिए चिंतन जरूरी

आध्यात्म में तीन चीजें बहुत महत्वपूर्ण हैं- मौन, एकांत, अंतर्मुखता

आध्यात्मिक उड़ान

डॉ. सचिन
मेडिटेशन एक्सपर्ट

■ शिव आमंत्रण

आबू रोड । एकांत में जाकर पहले अपने आप से बातें करनी हैं। दूसरा उस निराकार परमात्मा से बात करना। रोज समय निकालना है कुछ समय उससे बात करने के लिए। भगवान से बातें करना यह दूसरा काम रोज होना चाहिए और तीसरा काम है ज्ञान का चिंतन, सिमरन करना। जो ज्ञान हम सुनते हैं, जो ज्ञान हम पढ़ते हैं उसे केवल सुनना नहीं है परंतु सोचना है, इसके अंदर गहराई क्या है? ऊपर-ऊपर रहेंगे तो कुछ

सभी धर्मों में एक बात जो लिखी हुई है वह है अहिंसा। अहिंसा अर्थात् किसी को भी मनसा-वाचा-कर्मणा हमारी वजह से कोई तकलीफ ना हो...

नहीं मिलेगा। सोचना अर्थात् तैरना और चिंतन करना अर्थात् डूबना, सागर में गोताखोर की तरह अंदर जाना और मोती निकालना नीचे से। यह काम हमको रोज करना है। सभी धर्मों में एक बात जो लिखी हुई है वह है अहिंसा। अहिंसा अर्थात् किसी को भी मनसा-वाचा-कर्मणा हमारी वजह से कोई तकलीफ ना हो, कोई दुख ना हो।

अमृतवेले आत्माओं से मांगें माफी...
रोज सुबह अमृतवेले हम देखें उन सभी लोगों को जिन्हें हमने बहुत दुख दिया है और मन से उनसे माफी मांगी। दूसरा काम जिन्होंने हमको दुख दिया है उन्हें माफ भी करना है। यह काम अगर हम रोज करते रहे तो 6 माह में ऐसा अनुभव होगा जो भारीपन है, वह चला गया। चाहे किसी ने हमसे कैसा भी व्यवहार किया पर हम भगवान की संतान हैं, हमें सबको माफ कर देना है। हमारे साथ आज जो कुछ हो रहा है वह बहुत जन्मों का कार्मिक अकाउंट है। इसलिए अभी संगमयुग में इस जन्म में सब हिसाब-किताब चुकता होना है। हिसाब-किताब चुकतू तो दुकान भी बंद।

योग का प्रयोग: इंदौर के डॉक्टर बोले- तत्काल ऑपरेशन करना होगा, रिपोर्ट आई तो रह गए दंग

संकल्प शक्ति का कमाल... रिपोर्ट बदली, डॉक्टर भी रह गए अचंभित

बीके सुरेखा
संचालिका
पंधाना सेवाकेंद्र, ब्रह्माकुमारीज़, खंडवा, मप्र

संकल्प शक्ति

योग के प्रयोग से ट्यूमर हो गया खत्म

शिव आमंत्रण । खंडवा (मप्र) । हमारे संकल्पों में इतनी पॉवर होती है कि हर असंभव काम को हम संभव बना सकते हैं। यहां तक कि शुभ, श्रेष्ठ, शक्तिशाली और महान संकल्पों से हम अपने शरीर की बीमारी भी ठीक कर सकते हैं। मप्र के खंडवा (पंधाना) निवासी ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र संचालिका ब्रह्माकुमारी सुरेखा ने अपनी बीमारी पर संकल्प शक्ति का प्रयोग कर मिसाल कायम की है। न सिर्फ उन्होंने संकल्पों की पॉवर से अपनी बीमारी को मात दी, बल्कि डॉक्टरों तक के लिए अचंभित कर दिया। आज वह पूरी तरह स्वस्थ हैं और समाज कल्याण के कार्य में जुटी हैं। शिव आमंत्रण से विशेष बातचीत में उन्होंने अपने जीवन का अनुभव सांझा किया।

आइए, जानते हैं बीके सुरेखा का जीवन बदलने वाला अनुभव उन्हीं के शब्दों में- 'सबकुछ ठीक चला रहा था। पेट में दर्द होने पर 14 अगस्त 2018 को खंडवा में डॉक्टर को दिखाया। इस पर उन्होंने सोनोग्राफी कराई, जांच रिपोर्ट में आया कि पेट में सूजन हैं और कुछ बड़ी गठान है जो कैंसर की गठान जैसी दिख रही है। आपके लिए सारे लक्षण भी कैंसर के दिख रहे हैं। इस पर डॉक्टर ने 15 अगस्त को इंडोस्कोपी कराई, जिसमें आया कि पेट में साढ़े सात इंच का ट्यूमर है। आप तत्काल इंदौर दिखाइए। साथ ही डॉक्टर ने मेरे साथ जो भाई गए थे उन्हें बताया कि दीदी को लास्ट स्टेज का कैंसर है। बचना मुश्किल है।

फिर 17 अगस्त को इंदौर में सिटी स्कैन कराया। रात तक रिपोर्ट आई, जिससे क्लीयर हो गया था कि शरीर में जो लक्षण हैं वह कैंसर से संबंधित हैं। डॉक्टर के मुताबिक मेरी आंतें भी सुकुड़ चुकी थीं और हीमोग्लोबिन 6 पाइंट पर आ गया था। बड़ी दीदी से डॉक्टर बोले- तत्काल मेजर ऑपरेशन करना होगा। यही एकमात्र उपाय है। 21 अगस्त ऑपरेशन की तारीख भी तय हो गई। 18 अगस्त को फाइनल जांच हुई जिसकी रिपोर्ट 21 अगस्त को आना थी और ऑपरेशन होना था। अब मेरे पास दो दिन शेष थे। यह सुनते ही मेरे संबंधियों, रिश्तेदारों और दीदियां सभी नर्वस हो गए। मुझे भी अंदर से लगने लगा कि ये मेरी जिंदगी के अंतिम क्षण हैं। तत्काल ही इंदौर जोन की वरिष्ठ दीदियों ने मीटिंग कर ऑपरेशन की सारी तैयारियां कर लीं। 17 अगस्त शाम को रिपोर्ट आने के बाद मैं मेडिटेशन रूम में गई और ध्यान में बैठ गई। बीमारी का समाचार शिव बाबा को सुना ही रही थी कि तभी मेरी साथी बहन रूम में आई और कहा कि दीदी आपको घबराने की जरूरत नहीं है। अभी ऑपरेशन में दो दिन बाकी हैं न, अब कुछ करने और संकल्प शक्ति की पॉवर को पहचानने का यह सही समय है। आप अपनी संकल्प शक्ति से इस बीमारी को भी ठीक कर सकते हैं। इस पर मुझे हिम्मत आई और उसी क्षण मैंने ठाना कि अब कुछ ऐसा करुंगी जो पहले किसी ने नहीं किया है। मेरे पास मात्र 48 घंटे शेष थे, उसी क्षण से मैंने अपने अंतर्मन में अजपाजाप (किसी एक संकल्प का मन में लगातार दोहराव, स्मरण) शुरू कर दिया कि वाह मेरे प्रभु पिता परमात्मा आपने मेरी रिपोर्ट बदल दी.... और मैंने मन में विजुलाइज किया कि मैं नाच रही हूं... इसके अलावा दो दिन मन में कोई संकल्प नहीं। दिन-रात लगातार बिना सोए 48 घंटे एक ही संकल्प.... वाह मेरे बाबा वाह आपने मेरी रिपोर्ट बदल दी....। इस संकल्प के अलावा मैं सब भूल गई। इस दुनिया की सभी बातें, अपनी बीमारी और ऑपरेशन के बारे में। पूर्व निर्धारित प्लानिंग के मुताबिक ऑपरेशन की सारी तैयारियां मेरी बड़ी दीदियों ने कर ली थी।

अब ऑपरेशन के पहले फाइनल रिपोर्ट आना बाकी था। हम बड़ी दीदियों के साथ ऑपरेशन के लिए निकल भी चुके थे। इस दौरान मेरे मन में लगातार अजपाजाप चल रहा था कि वाह बाबा वाह आपने मेरी रिपोर्ट बदल दी और मैं मन ही मन खुशी में नाच रही हूं... ये बातें मेरे अंतर्मन में जैसे समां गई थीं। मुझे यह भी एहसास नहीं था कि मैं कार में बैठकर ऑपरेशन के लिए जा रही हूं और मेरे साथ-साथ कौन-कौन है। मन में बस एक ही संकल्प लगातार किए जा रही थी। इस दौरान हम लोग आधे रास्ते में पहुंच चुके थे।

और अचानक दीदी के पास आया फोन....

21 अगस्त को हम लोग खंडवा से इंदौर के लिए निकल गए थे। हमारी गाड़ी रास्ते में ही थी तभी हॉस्पिटल से इंदौर की बीके ऊषा दीदी के पास डॉक्टर का फोन आया कि पेशेंट की रिपोर्ट तुरंत ई-मेल पर भेजिए। दीदी ने कहा कि बहनें हॉस्पिटल के लिए ही निकल गई हैं। आप तो ये बताइए कि कैंसर कौन सी स्टेज का है। इस पर डॉक्टर ने कहा कि सारी रिपोर्ट नार्मल हैं, कैंसर नहीं है। सिर्फ ट्यूमर है। यह जानकर सभी लोग अचंभित रह गए कि यह चमत्कार कैसे हुआ? फिर बीके ऊषा दीदी ने हम लोगों को फोन किया कि रिपोर्ट नार्मल आई हैं। यह सुनते ही मैं खुशी में उछल गई। साथ ही प्यारे-मीठे शिव बाबा का बारम्बार दिल से धन्यवाद, शुक्रिया अदा किया। जीवन में बीमारी के रूप में आई उस कठिन परीक्षा में पास होने पर मैंने जाना कि जिस संकल्प शक्ति के कमाल की बातें हम बचपन से सुनते आए थे, आज उसका साक्षात् में चमत्कार अपने जीवन में अनुभव किया।

अब ट्यूमर से थी जंग, उसे भी संकल्प शक्ति से हराया...

जीवन में संकल्प शक्ति का एक प्रयोग सफल होने पर मैंने अब ट्यूमर पर दूसरा प्रयोग किया। जहां पर पेट में ट्यूमर की गठान थी, उस जगह पर रोज ब्रह्ममुहूर्त में हाथ लगाकर परमात्मा का स्मरण करते हुए संकल्प किया कि गठान बहन आप तो बहुत अच्छी हो... आप इतने दिनों से मेरे शरीर के अंदर हो... आपने कभी मुझे कोई दर्द नहीं दिया... मुझे अभी परमात्मा की सेवा करनी है, इसलिए मैं आपसे अनुरोध करती हूं कि आप अपना आकार छोटा कर लेवें। इस तरह मैंने ब्रह्ममुहूर्त और दिन में कई बार ये संकल्प दोहराया। जब दो माह बाद मैंने फिर से सोनाग्राफी कराई तो ट्यूमर का आकर छोटा गया था। साथ ही संकल्प शक्ति का यह प्रयोग मैंने लगातार जारी रखा। इसका नतीजा यह हुआ कि सातवें महीने में वह गठान (ट्यूमर) मेरे शरीर से पूरी तरह विदाई ले चुका था... इस तरह मैंने संकल्प की शक्ति का अपनी बीमारी पर प्रयोग कर उसे हराया। आप सभी के लिए मेरा यही संदेश है कि हमारे अंतर्मन में असीम शक्तियां हैं, जरूरत है तो उन शक्तियों का उपयोग करने की। अब तो मन से यही स्वर गूंजते हैं... धन्यवाद तेरा प्रभु धन्यवाद तेरा।

> सुरेखा बहन ने हिम्मत रखते हुए अपनी संकल्प शक्ति से बीमारी पर जो विजय पाई है वह अपने आप में बड़ी बात है। हमारे संकल्पों में बहुत पॉवर होती है यह बात हम बचपन से सुनते और सुनाते आए हैं लेकिन सुरेखा बहन ने इसे साबित कर दिखाया है। वैज्ञानिक भी इस बात को मान चुके हैं कि 95 फीसदी बीमारियों का कारण हमारा मन है। मन शक्तिशाली तो समस्याएं अपने आप छोटी हो जाती हैं।
>
> **बीके शक्ति, संचालिका, खंडवा सेवाकेंद्र**

> सुरेखा बहन ने हिम्मत रखते हुए अपनी संकल्प शक्ति से बीमारी पर जो विजय पाई है वह अपने आप में बड़ी बात है। हमारे संकल्पों में बहुत पॉवर होती है यह बात हम बचपन से सुनते और सुनाते आए हैं लेकिन सुरेखा बहन ने इसे साबित कर दिखाया है। वैज्ञानिक भी इस बात को मान चुके हैं कि 95 फीसदी बीमारियों का कारण हमारा मन है। मन शक्तिशाली तो समस्याएं अपने आप छोटी हो जाती हैं।
>
> **डॉ. अतुल शाह, खंडवा**

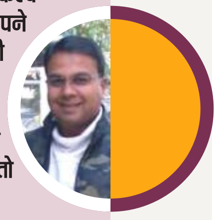

नई राहें

बीके पुष्पेन्द्र
संयुक्त संपादक, शिव आमंत्रण

गार्ड नहीं गाइड बनें

पंछी को भले सोने के पिंजड़े में रखा जाए लेकिन उसे जो सुकून, आनंद और मन का मौज खुले गगन में सैर से मिलता है वह पिंजड़े में नहीं मिल सकता है। क्योंकि पंछी ने अपने जीवन को किसी दायरे, परिधि और संसाधनों से मुक्त रखा है। उसका स्वभाव है उड़ना...सदा उड़ते ही जाना। खुला आसमान ही उसका जीवन है। साथ ही नित नए स्थल का बसेरा, नदी-तालाब, पेड़-पौधों को निहारना उसकी दिनचर्या। यही बात मानव जीवन में भी लागू होती है। ऊंची उड़ान वही भर सकता है जो बंधनों की जंजीरों से आजाद हो, जिसे जीवन रूपी यात्रा में अपनी यात्रा खुद चुनने, अपनी उड़ान कब, कहां, कैसे भरनी है ये फैसला खुद लेने की आजादी हो। कुछ दायरे तक बंधन ठीक भी है क्योंकि बिना परिधि के भटकने की गुंजाइश बनी रहती है। बच्चों को गार्ड और गाइड दोनों रूप में अभिभावक की जरूरत होती है। लेकिन युवावस्था में बच्चे के पहुंचते ही अभिभावक को चाहिए कि वह गार्ड की जगह गाइड की भूमिका को वरीयता दें। गाइड बनकर उसे जीवन की समझ, सही-गलत के ज्ञान के साथ अपनी राह खुद चुनने की स्वतंत्रता देना समय की जरूरत है। ट्रेन को जब तक गार्ड हरी झंडी नहीं दिखा दे तक ड्राइवर एक इंच भी आगे नहीं बढ़ाता है, भले उसे सामने से हरा सिग्नल मिल रहा हो। ये बात हमें सिखाती है कि जीवन में संयम, नियम और मर्यादा का होना जरूरी है। इसके उलट जब अभिभावक बच्चों को अपने फैसले लेने से रोकते और अपनी राय थोपते हैं और खुद के अरमान बच्चों के माध्यम से पूरा करना चाहते हैं तो वह भी जिंदगी रूपी गाड़ी में ट्रेन की तरह सीधी दिशा में चलते जाते हैं। भले बच्चे में हवाई जहाज की तरह नए लक्ष्य को पाने की काबिलियत हो, कुछ कर गुजरने का साहस, हिम्मत और जुनून हो। ऐसी स्थिति में वह मन मानकर अभिभावक की इच्छा के आगे खुद को समर्पण कर अपने अरमानों को तिलांजलि दे देता है। जबकि होना ये चाहिए कि जब बच्चे अपने फैसले लेने में खुद सक्षम हो जाएं, उनमें सही-गलत का बोध हो जाए और जीवन का भार उठाने के काबिल बन जाएं तो अभिभावक को सिर्फ गाइड की ही भूमिका निभाना चाहिए, ताकि वह अपने सपने, अरमानों के साथ खुले आकाश की उड़ान भर सके।

> **ऊंची उड़ान वही भर सकता है जो बंधनों की जंजीरों से आजाद हो, जिसे अपनी यात्रा खुद चुनने की आजादी हो...**

बच्चों को अपने फैसले लेने के लिए प्रेरित करें

बच्चों की परवरिश में माता-पिता को बचपन से ही उन्हें अपने फैसले खुद लेने की आदत डालना चाहिए। जब वह खुद फैसला लेते हैं और सफल होते हैं तो इससे उनमें आत्म विश्वास बढ़ता है। खुद पर भरोसा जागता है। धीरे-धीरे किशोरावस्था में उन्हें मनपसंद विषय से पढ़ाई करने और अपने कैरियर की राह खुद चुनने के लिए प्रेरित करें। खासकर बच्चा जब युवा हो जाए तो उसे खुद की जिंदगी से जुड़े सारे फैसले लेने दें। यदि आपको लगता है तो अपने जीवन के अनुभव के आधार पर गाइड कर सकते हैं। इससे उसके सामने हमेशा बेस्ट राह चुनने का मार्ग हमेशा खुला रहेगा। हमें तय करना होगा कि अपनी राय और विचार दूसरे पर थोपना कितना सही है? जो मुकाम हम जीवन में हासिल नहीं कर पाए उसे पाने के लिए बच्चों पर दबाव बनाना कितना सही है? प्रकृति से भी बात सीखी जा सकती है कि किसी बरगद के पेड़ के नीचे उसी के समान दूसरे पेड़ का विकास नहीं हो सकता है, जब तक कि उसका विकास खुले आसमान के नीचे न हो। वह पेड़ बढ़ेगा जरूर लेकिन उस ऊंचाई पर कभी नहीं पहुंच पाएगा जिसकी छांव तले वह बढ़ा हुआ है। गाइड का काम है रास्ता दिखाना और गार्ड का चौकीदारी, यह हम पर निर्भर है कि हम खुद को किस भूमिका में देखना चाहते हैं।

वंडर्स ऑफ BRAHMAKUMARIS

इस कॉलम में हम आपको हर बार ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के भाई-बहनों द्वारा समाजसेवा के क्षेत्र में मिलने वाले पुरस्कारों से रुबरु कराएंगे...

ऊर्जा संरक्षण क्षेत्र में श्रेष्ठ योगदान पर 'एनर्जी गोल्ड अवार्ड' से नवाजा

अवार्ड स्वीकारते हुए बीके केदार एवं बीके सुमंगला।

शिव आमंत्रण । हैदराबाद । तेलंगाना स्टेट रिन्यूएबल एनर्जी डेवलपमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड द्वारा तेलंगाना स्टेट एनर्जी कंजर्वेशन अवार्ड-2020 का आयोजन किया गया। डॉ. एमसीआरएचआरडी इंस्टीट्यूट ऑफ तेलंगाना के अक्षरा हॉल में आयोजित इस समारोह में टीएसजीईएनसीओ के सीएमडीडी प्रभाकर राव उपस्थित थे। इस दौरान ब्रह्माकुमारीज के संगारेड्डी सेवाकेन्द्र को ऊर्जा संरक्षण के क्षेत्र में दिए गए विशेष योगदान के लिए गोल्ड अवार्ड से नवाजा गया। यह अवार्ड सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके सुमंगला एवं एनर्जी को-ऑर्डिनेटर बीके केदार ने प्राप्त किया।

बीके डॉ. सुनीता लाइफटाइम अचीवर अवार्ड से सम्मानित

शिव आमंत्रण । आबू रोड । ज्वॉइंट्स वेलफेयर फाउंडेशन ब्रांच 3ए द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ की प्रेरक वक्ता बीके डॉ. सुनीता को लाइफ टाइम अचीवर पॉजीटिव एनर्जाइजर अवार्ड' से नवाजा गया है। राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस पर फाउंडेशन के अध्यक्ष जायंट विजय पटेल ने ऑनलाइन कार्यक्रम के माध्यम से बीके डॉ. सुनीता को अवार्ड से सम्मानित किया। इस दौरान बीके डॉ. सुनीता ने लेट्स कन्जर्व पॉजीटिव एनर्जी विषय पर संबोधित करते हुए कहा कि सकारात्मक ऊर्जा का संरक्षण करने के लिए, हमें अपनी पांच इंद्रियों से सकारात्मक इनपुट सुनिश्चित करके इसके ह्रास को रोकना चाहिए। यदि हम अपने भीतर से सकारात्मकता उत्पन्न नहीं करते हैं, तो इसे बाहर से प्राप्त करने की कोई आशा नहीं है। इसके लिए हमें भगवान को अपना विश्वासपात्र बनाना चाहिए और सर्वोच्च आत्मा को अपने जीवन की यात्रा के माध्यम से हमें मार्गदर्शन करने देना चाहिए।

अन्ना हजारे ने किया सम्मानित

शिव आमंत्रण । अहमदनगर । 174 विश्व रिकॉर्ड स्थापित और भारत के प्राचीन राजयोग के प्रसार-प्रचार के लिए उल्लेखनीय योगदान पर डॉ. बीके दीपक हरके को रालेगण सिद्धि में समाजसेवी अन्ना हजारे ने सम्मानित किया। इस दौरान डॉ. हरके को उन्हें इंटरनेशनल आइकन अवार्ड 2021 से नवाजा।

Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23, Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2021
Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month

शख्सियत

राजयोग से हम परमात्मा को सुना सकते हैं दिल की बात

लेफ्टीनेंट कर्नल विकास चौहान

राजयोग मेडिटेशन है टू-वे कम्युनिकेशन, आध्यात्म से मांसाहार और गुस्सा छूटा

पिताजी भी थे फौज में, मां के परिवार की पांचवीं पीढ़ी....

लेफ्टीनेंट कर्नल चौहान ने बताया कि मेरे पिताजी सेना में थे। इससे घर में बचपन से सख्त, अनुशासित जीवनशैली रही। साथ ही मेरी मां की पांचवीं पीढ़ी सेना में है। फैमिली बैकग्राउंड फौज का होने से संस्कार में कड़क मिजाज और गुस्सा था। साथ ही मांसाहार का भी सेवन करता था। पिताजी आर्मी के जूते पहनकर साथ में खेलते थे, जब भी उन्हें गुस्सा आता था तो वह जूते से ही मारते थे। पढ़ाई के बाद मैंने भी आर्मी ज्वॉइन की और यहां ऑफीसर बन गए।

शिव आमंत्रण

आबू रोड । राजयोग मेडिटेशन ध्यान की वह विधा है जिसके माध्यम से हम परमात्मा को अपने दिल की बात सुना सकते हैं। दरअसल यह टू-वे कम्युनिकेशन है, जिसमें हम अपनी सारी परेशानियां, समस्याएं और उलझने परमात्म के साथ शेयर कर सकते हैं। बदले में परमात्मा हमें वरदान, सदा निश्चिंत भव का आशीर्वाद और यह स्वमान याद दिलाते हैं कि आप साधारण नहीं महान आत्मा हो, आपका जन्म महान कार्यों के लिए हुआ है। सफलता आपका जन्मसिद्ध अधिकार है। राजयोग मेडिटेशन के अभ्यास से सेना में होने के बाद भी मैं मांसाहारी से शाकाहारी बन गया और गुस्सा शांति में बदल गया। यह कहना है लेफ्टीनेंट कर्नल विकास चौहान का।

ब्रह्माकुमारीज संस्थान के माउंट आबू स्थित ज्ञान सरोवर अकादमी में राजयोग मेडिटेशन के नियमित अभ्यास से जीवन में आए परिवर्तन का अनुभव सुनाते हुए उन्होंने कहा कि आर्मी में ऑफीसर बनने के बाद मुझे महसूस होने लगा कि अपने गुस्से को कम करना है। साथ ही पूरी तरह शाकाहार अपनाना है। मन में ये ऊथल-पुथल लंबे समय से चल रही थी, लेकिन इसे जीवन में कैसे अप्लाई करें, इसकी कोई राह नहीं दिख रही थी।

वर्ष 1999 की बात है। मेरी पोस्टिंग सीओडी मुंबई में लेफ्टीनेंट कर्नल के रूप में हुई। उस दौरान कारगिल युद्ध चल रहा था। एक युद्ध तो कारगिल में चल रहा था और एक युद्ध मेरे अंदर चल रहा था कि मुझे गुस्सा क्यों आता है? मैं खुद से बात करता-रहता था लेकिन कोई जवाब नहीं मिलता था कि ऐसी स्थिति में क्या करूं।

एक दिन मेरे ऑफिस में दो ब्रह्माकुमारी बहनें फौजी भाइयों को राखी बांधने के लिए आईं। मैंने उनसे कहा कि आप लोग यहां राखी बांधने क्यों आईं तो उन्होंने कहा कि वहां कारगिल में युद्ध चल रहा है, लेकिन वहां तो हम बहनें जहां नहीं सकती हैं, इसलिए यहां हमारे फौजी भाइयों को राखी बांधने आएं हैं ताकि हमारे दिल की दुआ उन तक पहुंचे। इस तरह का विचार पहली बार सुनकर मैं हैरान रह गया। मैंने कमांडर से अनुमति लेकर उन्हें अगले दिन राखी बांधने के लिए मंजूरी दी। दूसरे दिन उन बहनों ने ब्रह्माकुमारी संस्थान का परिचय देते हुए आत्मा-परमात्मा आदि का ज्ञान दिया, लेकिन एक बात जो मेरे दिल को छू गई। उन्होंने कहा कि भाइयों हम आप सभी से एक वायदा चाहते हैं, क्या हम जो मांगेंगे आप देंगे? उन्होंने कुछ पर्चियां हम सभी को दीं और कहा कि जो चीज आप वर्षों से नहीं छोड़ पा रहे हैं, उसे आज हमें दान में दे दो। इस पर मैंने उन्हें लिखकर दिया कि मैं क्रोध से बहुत परेशान हूं, इसे छोड़ना चाहता हूं। उन दिन मुझे ऐसा लगा कि जैसे मेरे मन का बोझ हल्का हो गया है।

उसी दिन मैं शाम को मुंबई के ब्रह्माकुमारी सेवाकेंद्र पर पहुंचा, वहां पहुंचते ही ब्रह्माकुमारी बहन ने कहा कि परमात्मा कहते हैं हमें प्रसन्नचित्त रहना चाहिए, प्रश्नचित्त नहीं। यह बात मेरे दिल को छू गई। इसके बाद मैंने सात दिन का राजयोग मेडिटेशन कोर्स किया। बाद में मेरी पत्नी ने भी राजयोग का कोर्स किया।

> जब हम राजयोग का अभ्यास करते हैं तो हमारी शक्तियां जागृत हो जाती हैं और विल पॉवर बढ़ती है। जीवन में दुआएं कमाना बहुत जरूरी है। दुआएं हमें आगे बढ़ाने में लिफ्ट का काम करती हैं।

वर्ष 2011 में पहली बार आया था माउंट आबू

अपना अनुभव सुनाते हुए उन्होंने कहा कि हमारे संकल्पों में असीम शक्ति है। जीवन में जब कभी मुसीबत में फंसो तो सबकुछ परमात्मा पर सौंप दो, परमात्मा अपने बच्चों का कभी भी नाम खराब नहीं होने देता है। मुझे विश्वास नहीं था कि मैं राजयोग का अच्छा अभ्यासी बन सकता हूं। वर्ष 2011 में मैं पहली बार ब्रह्माकुमारीज संस्थान के माउंट आबू स्थित ज्ञान सरोवर अकादमी में आया। यहां तीन दिवसीय शिविर में गहराई से राजयोग मेडिटेशन के बारे में सुना और अनुभव किया तो मुझे एहसास हुआ कि मैं भी कुछ कर सकता हूं।

जवान की खुदकुशी से लिया सबक... अब कुछ करना है

वर्ष 2013 में सीओडी कानपुर में था। एक दिन अशोक गाबा जी का फोन आया कि शाहजहांपुर में एक ब्रिगेड में एक जवान ने ड्यूटी के दौरान खुद को गोली मार ली है तो आपको वहां स्ट्रेस मैनेजमेंट का कोर्स कराने जाना है। मेरे साथ ब्रह्माकुमारी बहनें भी थीं, वहां मैंने तीन दिन अच्छी तरह से सुना और उसे जीवन में अप्लाई करना का ठाना। इसके बाद मेरी कानपुर से पोस्टिंग अहमदाबाद हुई। यहां वर्ष 2014 में जैसे ही यहां आया कि 10 अक्टूबर को एक जवान ने खुदकुशी की कोशिश की। उसकी जांच मुझे दी गई। इस दौरान 11 जनवरी 2015 को एक जेसीओ ने अपनी बटालियन में खुदकुशी कर ली। इन दो घटनाओं के बाद मैंने अपने सीईओ से कहा कि मुझे कुछ करना है और परमिशन के लिए गुजारिश की। इसके बाद मैंने अपने फौजी भाइयों को स्ट्रेस से उबारने के लिए स्ट्रेस मैनेजमेंट कोर्स की शुरुआत की।

संदेशः जीवन में दुआएं कमाना बहुत जरूरी

उन्होंने कहा कि कोई भी कार्य जब हमें करना ही है तो क्यों न खुशी से करें। अपने जॉब को एंजॉय करके करें। इतना ख्याल रखें कि यदि हमें ऊपर से स्ट्रेस मिला तो हम उसे डिस्ट्रीब्यूट न करें, नहीं तो एक दिन वापस वह हमारे पास ही लौटकर आता है। मैंने अनुभव किया कि आप जिस भी पेशे में हो और अधिकारी हों तो अपने अधीनस्थों के लिए कभी भी छुट्टी के लिए मना नहीं करें। इससे आपको सदा दुआएं मिलेंगी। आप किसी भी इंसान की गलती को सहन करो, हर एक इंसान में कुछ न कुछ अच्छाई है। इसलिए हमेशा लोगों की अच्छाई को देखना चाहिए। जब हमारे दिल में किसी के प्रति शुभभावना होती है तो हमारे जीवन में भी खुशी बढ़ती है। परमात्मा हमें सहन शक्ति और समाने की शक्ति देते हैं।

जब हम राजयोग का अभ्यास करते हैं तो ये शक्तियां जागृत हो जाती हैं और हमारी विल पॉवर बढ़ती है। जीवन में दुआएं कमाना बहुत जरूरी है। दुआएं हमें जीवन में बहुत आगे बढ़ाती हैं।

सियाचीन ग्लेशियर में हुई पहली पोस्टिंग...

लेफ्टीनेंट कर्नल चौहान ने बताया कि मेरी पहली पोस्टिंग सियाचीन ग्लेशियर में इनफैक्टरी बटालियन में हुई। वहां 18380 फीट पर मेरी ड्यूटी थी। संयोग से 20 साल बाद फिर से वहीं पोस्टिंग हुई, लेकिन जब दोबारा ज्वॉइन करने के बाद सियाचीन ग्लेशियर पर चढ़ा तो मैंने संकल्प किया कि अब मांसाहार का सेवन नहीं करूंगा। मेरी पोस्ट में दस सरदार सैनिक भी थे, जो पूरी तरह शाकाहारी थे। बाकी सभी मांसाहारी थे। वहां तीन माह रहा और पूरी तरह शाकाहारी बन गया।

प्रकाशक एवं मुद्रकः ब्र.कु. करुणा द्वारा प्रकाशित एवं डी.बी. सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित ● सलाहकार संपादकः प्रो. कमल दीक्षित ● संपादकः ब्र.कु. कोमल ● संयुक्त संपादकः ब्र.कु. पुष्पेन्द्र ● RNI No.: RJHIN/2013/53539